लोक
परलोक
(पहेली)

श्रीमान कैलाशनाथ भार्गवजी
"अमर"
को
सप्रेम भेंट

लोक-परलोक

(सिनेमा नाटक तथा ड्रामा दोनों रूप में)

हास्य-व्यङ्ग मिश्रित धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक सुधारों से कूट-कूट कर भरी फड़कती और चुभती हुई अपूर्व और विलक्षण कहानी

लेखक :

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव,

बी० ए०, एल्-एल्० बी०

प्रकाशक :

कर्मयोगी प्रेस, लिमिटेड,

रैन बसेरा, इलाहाबाद

मूल्य दो रुपया

मुद्रक : ओ० आर० सहगल
प्रकाशक : कर्मयोगी प्रेस, लिमिटेड,
स्थान : रैन बसेरा, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण : एप्रिल, १९५०

प्रकाशक के नाते

"लोक-परलोक" श्री० जी० पी० श्रीवास्तव की एक अत्यन्त ही विलक्षण रचना है। इसके मुख्य चरित्र 'क़ानूनीमल' का जन्म 'चाँद' के फाँसी अङ्क में 'क़ानूनीमल की बहस" के नाम से हुआ था। वह बहस ऐसी अपूर्व और मनोरञ्जक थी कि हिन्दी संसार में 'क़ानूनीमल' का नाम अमर हो गया है!

इसी चरित्र का विकास सिनेमा नाटक के रूप में श्रीवास्तवजी ने इस पुस्तक में किया है। और ऐसा करने में उन्होंने आकाश-पाताल-पृथ्वी तीनों लोक, तथा धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों को ऐसा मथ डाला है कि उनकी अथाह कल्पना और लेखनी के चमत्कार पर दाँतों तले उङ्गली दबानी पड़ती है।

पुण्य को पुण्य तो सभी कहते हैं मगर पुण्य को पाप और पाप को पुण्य साबित कर देना असम्भव है। मगर क़ानूनीमल के लिये कोई बात असम्भव नहीं है। इस सफ़ाई से उत्तम को निकृष्ट, निकृष्ट को उत्तम, पाप को पुण्य, पुण्य को पाप, धर्म को अधर्म, और अधर्म को धर्म साबित

कर देते हैं कि ब्रह्मा तक की बुद्धि चकरा उठती है और मारे हँसी के पेट में बल पड़ जाते हैं। साथ ही साथ प्राकृतिक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा राजनैतिक समस्याओं और प्रचलित त्रुटियों पर ऐसी बेढब चुटकियाँ लेते जाते हैं कि दार्शनिक तथा सुधारक की दृष्टि भी बस टकटकी बाँधे ताकती रह जाती है। अन्त में इतने सुन्दर ढङ्ग से लेखक महोदय क़ानूनीमल के हृदय को ईश्वर तथा देश-भक्ति की ओर मोड़ देते हैं कि बिना वाह-वाह किये नहीं रहा जा सकता।

कहानी भी अलौकिक है और इतने सुन्दर रूप से उसका प्रदर्शन कराया गया है कि पाठक की दृष्टि में सिनेमा की तरह जीती जागती हुई कहानी आगे बढ़ती जाती है। इसके स्टेज पर नाटक के रूप में खेलने के लिये भी लेखक महोदय ने अन्त में ढङ्ग लिख दिये हैं। इस प्रकार यह पुस्तक हर प्रकार के पाठक के अतिरिक्त सिनेमा प्रेमी और नाटक प्रेमी के लिये भी विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी हमारी आशा है।

लोक-परलोक

सिनेमा-नाटक

दृश्य १
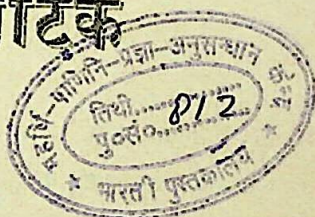
डॉक्टर सिन्हा का ऑफ़िस रूम

(कुछ मरीज़ इन्तज़ार में बैठे हैं और डॉक्टर सिनहा एक मरीज़ की नब्ज़ देख रहे हैं। टेलीफ़ोन की घण्टी घनघनाती है)

डॉक्टर सिनहा—(मरीज़ छोड़ कर टेलीफ़ोन पर) "हैलो! अयँ! क्या मिस्टर क़ानूनीमल कोर्ट में बहस करते-करते यकायक बेहोश हो गए?...।"

दृश्य २

कचहरी का टेलीफ़ोन रूम

मिस्टर वर्मा वकील—(टेलीफ़ोन पर)—"जी हाँ, और नब्ज़ का पता नहीं है।"

दृश्य ३

पहिला दृश्य दूसरी बार

डॉक्टर सिनहा (टेलीफ़ोन पर)—"कहाँ हैं ? वहीं जज साहब के आराम-कमरे में ? अच्छा। मुँह पर पानी के छींटे दीजिए और सीना, हाथ, पैर ख़ूब मलिए, मैं अभी आया।"

दृश्य ४

सड़क

(भगुआ भङ्गी सड़क पर झाड़ू दे रहा है और सामने से ढबढब पाँडे माथे पर चन्दन पोते, सर पर लम्बी-चौड़ी पगड़ी बाँधे, बन्ददार लम्बी छकलिया अचकन पहने, बग़ल में पोथी दबाए, नङ्गे पैर "सीताराम ! सीताराम !!" कहते हुए जल्दी-जल्दी चले आ रहे हैं)

ढबढब पाँडे—(भगुआ को देखते ही यकायक दूर ही पर रुक कर) —"अरे ! ओ चाण्डाल ! देखता नहीं कि ढबढब पाँडे चले आ रहे हैं और सड़क पर से हट नहीं जाता ? यदि तनिक भी परछाहीं मेरे शरीर पर पड़ गई तो मेरा धर्म भ्रष्ट हो जायेगा कि नहीं ?"

भगुआ—"हम हट जाई तो एहका बहारी के ? तू ? जानत हो कि यह सड़क तीन बखत बहारे का हुकुम है।......अरे ! आप होई पाँडे जी हम चीन्हा नाहीं"

(भगुआ हट कर सड़क के किनारे पर चला जाता है। और पाँड़े जी नाक बन्द करके राम-राम कहते और परछाहीं बचाते हुए निकलते हैं ।

वैसे ही पीछे मोटर का हॉर्न सुनाई पड़ता है और मिस्टर सिनहा अपनी मोटर पर आते दिखाई देते हैं । पाँडे जी बौखला कर मोटर के आगे ही बेतहाशा भागते हैं । घबराहट में उनकी बग़ल की पोथी गिर कर बिखर जाती है और पगड़ी खसक कर मुँह पर लटक पड़ती है । जब वह किसी प्रकार सम्हाले नहीं सम्हलती और खुल जाती है तब वह उसे अपनी कमर में लपेटते हुए दौड़े जाते हैं । और जिस तरफ़ से मिस्टर सिनहा अपनी मोटर कतरा कर निकालना चाहते हैं, आप भी ऐन मौक़े पर उसी तरफ़ भाग कर आ जाते हैं । आजिज़ आकर मिस्टर सिनहा मोटर रोक कर ग़ुस्से में उतरते हैं और उनका पीछा करके दोनों हाथों से उनका एक हाथ पकड़ कर किनारे की ओर खींच लेते हैं)

मिस्टर सिनहा—"बेवक़ूफ़ कहीं के। इधर नहीं हटा जाता। अभी दब जाते तो..."

(मिस्टर सिनहा अपनी मोटर पर बैठने जाते हैं और पाँडे जी खींच लिए जाने की ज़ोर में 'राम! राम!!' कहते हुए बहुत दूर तक पहुँच कर एक पेड़ से टकरा कर रुकते हैं !)

ढबढब पाँडे—राम! राम! राम! अरे! बाप रे बाप!

(पाँडे जी घूम कर ताकते हैं और उनकी नज़र मिस्टर सिनहा के पायदान पर रखते हुए पैर के जूतों पर पड़ती है)

ढबढब पाँडे—"अयँ! इसने जूता पहिने मेरे हाथ को छू लिया! (मोटर के पास अपना एक हाथ फैलाए लपकते हुए) अरे! ओ मोटर वाले, ख़बरदार अभी मोटर मत चलाना!!"

मिस्टर सिनहा— (मोटर पर से)—"क्या है ?"

ढबढब पाँडे—(हाथ फैलाए हुए पास जा कर)—"तुमने जूता पहिने मेरे हाथ को क्यों छू लिया ? अब यह अपवित्र हो गया कि नहीं ?"

मिस्टर सिनहा—"*Nonsense !*"

(मिस्टर सिनहा झुँझला कर मोटर का दरवाज़ा बन्द करते हैं, जिसमें पाँडे जी की कमर में लिपटी हुई पगड़ी का एक सिरा फँस जाता है। इसकी वजह से मोटर चलने के साथ कुछ दूर तक पाँड़े जी खिंच जाते हैं । फिर चकरघिन्नी की तरह नाचने लगते हैं और मोटर उनकी समूची पगड़ी लिए सर से निकल जाती है। और पाँडे जी नाचते-नाचते अन्त में गिर पड़ते हैं)

ढबढब पाँडे—(हाथ फैलाए हुए बैठ कर)—"धन्य भगवान ! इस बवण्डल में इस अछूत अङ्ग से और अङ्ग नहीं छूने पाया, नहीं तो सब शरीर ही भ्रष्ट हो जाता ! परन्तु अब इसको..."

दृश्य ५

जज साहब का आराम-कमरा

(हाकिम, वकील और कचहरी के लोग जमा हैं। उनके बीच में आराम-कुर्सी पर क़ानूनीमल अचेत पड़े हैं और डॉक्टर सिनहा उनकी धड़कन की जाँच कर रहे हैं)

डॉक्टर सिनहा—"ताज्जुब है। इतना ताक़तवर इन्जेक्शन और उसने भी कुछ काम नहीं किया। दिल डूबता ही जा रहा

है। अच्छा अब इनको मेज़ पर लेटाइये, दूसरा इन्जेक्शन लगाऊँ।"

(कमरे के एक कोने में यमदूतों का सरदार यकायक ज़ाहिर हो कर क़ानूनीमल को ओर इशारा करता है। वैसे क़ानूनीमल का छाया-रूप आँख बन्द किए हुए उनके अचेत शरीर से निकल कर यमदूत सरदार के पास जाता है। फिर दोनों वहाँ से अलोप हो जाते हैं। कमरे के लोग क़ानूनीमल को कुर्सी से उठा कर मेज़ पर लेटाते हैं और डॉक्टर सिनहा इन्जेक्शन लगाने के लिए उनकी बाँह को अपने हाथ में लेते हैं। मगर वैसे ही घबरा कर नब्ज़ देखते हैं। फिर जल्दी से पलक उठा कर उनकी आँख की पुतली की परीक्षा करने लगते हैं)

डॉक्टर सिनहा—(गम्भीर तथा शोकभाव से)—"अब इन्जेक्शन देना बेकार है।"

मेज़ के पास के लोग —"क्यों ? क्या मर गए ? सचमुच ?"

दृश्य ६

आकाश

यमदूत सरदार क़ानूनीमल की गर्दन पकड़े हुए बादलों के बीच से होता हुआ आकाश में ऊपर उड़ता चला जा रहा है। नीचे पृथ्वी का गोलाकार दिखाई पड़ कर धीरे-धीरे नक्षत्र का रूप धारण कर लेता है।

दृश्य ७

कचहरी का हाता

(एक स्थान पर दो आदमी। एक कोट-पैंट-हैट-धारी और दूसरा अचकन, पाजामा, तुर्की टोपी)

हैट—(सिगार पीता हुआ)—"सच है। दो घड़ी में क्या होने वाला है, कोई नहीं जानता।"

तुर्की टोपी (पान खा कर बटुए से ज़र्दा निकाल कर खाता हुआ)—"इसमें क्या शक है। मगर मिस्टर क़ानूनीमल की जगह हमेशा खाली रहेगी। उनके टक्कर का वकील होना ग़ैर-मुमकिन है।"

(दूसरे स्थान पर दूसरे दो आदमी एक कुर्ता-धोती, गाँधी टोपी पहने और दूसरा लम्बा कोट धोती और फ़ैल्ट कैप)

गाँधी टोपी—(सुरती हथेली पर मल कर खाता हुआ)—"क़ानूनीमल ऐसे वकील भी, जो दुनिया की आँखों में धूल झोंकना जानते थे, दूसरों को फाँसी के तख़्ते से उतार लेते थे, ख़ुद अपनी गर्दन मौत के पञ्जे से न छुड़ा सके।"

फ़ेल्ट कैप—(तम्बाकू सुरकता हुआ)—"हाँ भाई, राजा-प्रजा, अमीर-ग़रीब, ज्ञानी-नासमझ, चालाक-बौड़म सभी मौत की निगाह में एक हैं।"

(तीसरे स्थान पर दो आदमी एक क़मीज़ लुङ्गी और दुपल्ली टोपी पहने और दूसरा मिर्जई और पगड़ी)

दुपल्ली टोपी—(हुक्का पीता हुआ)—"ऐसे अमीर, ऐसे दबङ्ग, ऐसे शौक़ीन और ऐसे रँगीले, जो अपने मतलब, शौक़ और गुलछर्रों के पीछे परवरदिगार तक को भूले हुए थे; आख़िर ऐसे मरे, कि उन्हें दवा तक करने की भी मुहलत न मिली।"

पगड़ी—(हुक्के से चिलम उतार कर बीड़ी सुलगाता हुआ)—

"ईश्वर की लीला अपरम्पार है। ऐसी ही बातों से तो जाना जाता है, कि परमात्मा भी कोई चीज़ हैं।"

दृश्य ८

दरिया का एक नुकीला किनारा

(ढबढब पाँडे दरिया के नुकीले किनारे पर कपड़े उतारे बैठे हुए अपने अछूत हाथ को झुक-झुक कर भीगे किनारें पर रगड़ रहे हैं)

ढबढब पाँडे (हाथ भीगे किनारे पर रगड़ते हुये)—"पवित्रं पवित्रं पवित्रंमातु पृथ्वी पवित्रं कुरू...।"(रगड़ने के झटके में उनका दूसरा हाथ इस हाथ की तरफ़ कभी-कभी झुक पड़ता है। तब झुँझला कर अपने दूसरे हाथ को डाँटते हुए)—अभी क्यों घुसा पड़ता है मूर्ख! १०८ बार इसे पृथ्वी और जल से शुद्ध कर लेने दे। नहीं छू जायगा; तो तेरी भी यही गति होगी, पवित्रं पवित्रं...अयँ! तू फिर नहीं मानता। अच्छा तो ले। (अपने दूसरे हाथ को अपनी गर्दन पर चढ़ा लेता है)...पवित्रं अरे! अरे! (बैलेन्स बिगड़ जाने से दरिया में लुढ़क कर डूबने लगते हैं) हाय! बाप...मरा... मरा..."

दृश्य ९

यमलोक का एक स्थान

(यमदूत सरदार और क़ानूनीमल)

यमदूत सरदार—"अय मृत आत्मा अब आँखें खोल और होश में आ।"

क़ानूनीमल (होश में आकर)—"धत् तेरे की ! आँख खोलते ही यह कम्बख़्त कौन मनहूस दिखाई पड़ा ? आज सारा दिन का दिन चौपट हुआ। अबे तू कौन है ? सुबह ही सुबह तुझे अपनी सूरत दिखानी थी। बड़े ख़ूबसूरत हैं आप न ? वाह री शकल, पता ही नहीं मिलता, कि आदमी है, कि जानवर और हिम्मत तो देखिए कि आ कर झट जगा दिया। चल दूर हो यहाँ से।"

यमदूत सरदार (ज़रा घबरा कर)—"अयँ ? यह क्या ? क्यों जी, क्या तुम अब भी मृत्युलोक ही का स्वप्न देख रहे हो ?"

क़ानूनीमल—"शकल चुड़ैलों की और मिज़ाज परियों के। अबे ज़रा अपनी हैसियत देख कर बात कर। जानता है ? मैं कौन हूँ ? मिस्टर क़ानूनीमल वकील और एम० एल० ए०। तुझ ऐसों को जहन्नुम की हवा खाने के लिए चुटकियों में भिजवा देता हूँ।"

यमदूत सरदार—"अहाहा हा ! मगर अब तो तुम्हें जहन्नुम की हवा खिलाना मेरा काम है। बस, बहुत हो चुका। अपनी ऐंठ भूल जाओ। यह मृत्यु लोक नहीं, यह है यमलोक। तुम यहाँ मर कर आए हो।"

क़ानूनीमल—"तेरी ऐसी-तैसी। मर जाए तेरा बाप ? ज़बान सम्हाल कर बातें कर, नहीं अभी हतक-इज़्ज़ती का दावा कर दूँगा। मिज़ाज ठिकाने हो जायेगा।"

यमदूत सरदार—"अच्छा पहिले अपना मिज़ाज तो ठिकाने कर लो। जहाँ तुम मरने के पहिले थे और जहाँ के सभी प्राणी को एक न एक दिन मरना पड़ता है वह मृत्युलोक देखो वह है।"

दृश्य १०

आकाश

(नक्षत्रों से घिरा हुआ पृथ्वी का गोलाकार, जिसके ऊपरी भाग में हिन्दुस्तान का नक़शा दिखाई पड़ता है)

दृश्य ११

फिर नवाँ दृश्य दूसरी बार

(यमदूत सरदार क़ानूनीमल की तरफ़ देख कर मुस्कराता हुआ)

क़ानूनीमल (सोच में)—मामला क्या है ? क्या मैं सचमुच मर गया। इधर दिल-धड़कन की शिकायत कुछ शुरू जरूर हो चली थी और डॉक्टर से आराम करने की ताकीद भी की थी। मगर—

(अपने मरने के समय का ख़्याल करता है)

दृश्य १२

जज साहब का इजलास

क़ानूनीमल (बहस करते हुए)—"माई लॉर्ड! अब तो यक़ीन हो गया होगा, कि यह होनहार नौजवान किसी तरह

भी फाँसी की सजा के लिए मुजरिम नहीं क़रार दिया जा सकता। और मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि साबित होने पर भी किसी भी जुर्म में और खास कर पोलिटिकल जुर्म में फाँसी की सजा देना क़ानून की मंशा को खाक में मिलाना है—एकदम खाक में मिला...आह !...अरे !..."

(चकरा कर कुर्सी पर गिर पड़ता है)

जज साहब—"अरे ! यह क्या ? क्या हुआ मिस्टर क़ानूनीमल ? कैसी तबियत है ?

क़ानूनीमल—(कुर्सी पर से धीरे-धीरे उठाते हुए)—"इन दिनों कुछ चक्कर आने लगा है। उसीका इस वक़्त भी शायद जरा झोंका आ गया। मगर अब अच्छा हूँ माई लॉर्ड मेनी थैंक्स।"

जज साहब—" आप फ़ौरन जाकर आराम कीजिए और अपने को किसी डॉक्टर को दिखाइए। हालाँकि आख़ीर में यह कह कर कि—साबित होने पर भी किसी भी जुर्म में फाँसी की सजा देना क़ानून की मंशा को खाक में मिलना है—आपने मुझे ताज्जुब में डाल दिया है और इस पर भी आपकी दलीलें सुनना चाहता हूँ। ख़ैर ! किसी और दिन सही।"

क़ानूनीमल—माई लॉर्ड ! इस बात की सचाई तो दो शब्दों में अभी ज़ाहिर किए देता हूँ। क़ानून ने सजाएँ तीन बातों के खयाल से रक्खी हैं। एक यह, कि जुर्म करने वाला सुधारा जाए। दूसरी यह, कि दूसरों के लिए सबक़ हो और तीसरी यह, कि जुर्म से समाज में जो बदला लेने की आग भड़क उठती है

वह बुझ जाए, ताकि हर तरह अमन रहे। अब देखिए, फाँसी की सज़ा इन तीनों बातों पर कैसी उल्टी झाड़ू फेरती है! मुजरिम की मौत से सुधार का मसला एकदम ग़ायब हो जाता है। ज़माने ने दूसरी बात ग़लत सबित कर दी, यानी लाखों फाँसियाँ होने पर भी जुर्म का होना बन्द न हो सका। अब रहा बदले का सवाल। वह भी बेकार है। उसे वक़्त .खुद मिटा देता है, क्योंकि दुश्मन की फाँसी पर भी समाज कभी फूला नहीं समाता और न .खुशी में ताली पीटता है। बल्कि उल्टे तरस खा कर अफ़सोस करने लगता है।"

एक दर्शक—"वाह! वाह! बलिहारी है क़ानूनीमल की!"

दूसरा दर्शक—"क्यों नहीं? तभी तो भाई इनके नाम की इतनी धूम है।"

जज साहब—थैंक्यू मि० क़ानूनीमल बेशक आप की दलीलें मार्कें की और क़ानून के लिए ग़ौर करने क़ाबिल हैं!"

क़ानूनीमल—"अब इसी सिलसिले में—"

जज साहब—"नहीं मिस्टर क़ानूनीमल, अब बस कीजिए आपकी तबियत..."

क़ानूनीमल—"थैंक्यू माई लॉर्ड अब बिलकुल अच्छा हूँ, इस सिलसिले में सिर्फ़ थोड़ा ही कहना है। हाँ, अब देखिए पोलिटिकल जुर्मों में फाँसी की सजा किस क़दर ग़ैर-मुनासिब है। सलतनत के ख़िलाफ़ रय्यत तभी आवाज़ उठाएगी जब हुकूमत की किसी न किसी बात से तङ्ग हो उठेगी। उस वक़्त सल्तनत

को फ़ौरन अपने उन ऐबों को ढूँढ़ कर सुधारना चाहिए। तभी इन जुर्मों में कमी हो सकती है। दर्द से चिल्लाने वालों को दुनियाँ से हटाने में क्या फ़ायदा। दर्द पहुँचाने वाले ऐब तो वैसे ही बने रहे। इसके अलावा यह भी ख्याल करना चाहिए, कि मुल्क यानी घर की मुहब्बत एक क़ुदरती मुहब्बत है! जानवरों तक में पाई जाती है और सभी मुल्क और जातियों में इज़्ज़त की निगाह से देखी जाती है! अगर कोई बेचारा नासमझ इस मुहब्बत से अन्धा हो कर कोई बेजा काम कर बैठे, तो उसके लिए फाँसी उफ़! इतनी कड़ी सज़ा? अरे?...आह!"

(बेहोश हो कर गिर पड़ता है)

दृश्य १३

फिर नवाँ दृश्य तीसरी वार

यमदूत सरदार (क़ानूनीमल से)—"अब भी कुछ शक हो तो वह देखो अपने मकान पर अपने सम्बन्धियों के बीच में अपनी लाश।

दृश्य १४

क़ानूनीमल के घर का आँगन

(क़ानूनीमल की लाश ज़मीन पर पड़ी है। आँगन सम्बन्धियों से भरा है। कोई रो रहा है, कोई अफ़सोस कर रहा है और पुरोहित जी जल्दी करने के लिए चिल्ला रहे हैं)

पुरोहित—"अरे भाई। अब रोने-धोने से क्या होगा। अब जल्दी अन्तिम संस्कार का प्रबन्ध करो। देखो अब समय नहीं रहा..."

एक सम्बन्धी (पुरोहित जी को एक किनारे ले जाकर चुपके-चुपके)—"जल्दी क्यों मचाए हो पुरोहित जी? लाश गङ्गा किनारे ले जाते ले जाते रात हो ही जायगी। उस पर ससुरी आधी रात तक कहीं जलेगी। इस जाड़े-पाले में हम लोगों को वहाँ रात भर नङ्गे बदन खड़ा रख कर मार डालने वाले हो क्या? लगाओ कोई भद्रा का अड़ङ्गा, जिसमें लाश कल दिन में ले जानी पड़े।"

दृश्य १५

फिर नवाँ दृश्य चौथी बार

यमदूत सरदार—"अब तो मेरी बात का विश्वास हुआ? बस अब चलने की तय्यारी कीजिए।"

क़ानूनीमल—"कहाँ और किस पर? तुम्हारे सर पर? तुम्हारे यहाँ कोई सवारी-उवारी भी है?"

यमदूत सरदार—वाह-वाह क्या आप कोई पुण्यात्मा हैं, जो आपके लिए वैकुण्ठ का विमान आवेगा? जाना तो है नर्क को और चलेंगे सवारी पर! वाह री ऐंठ! अजी बाबू साहब, यही अपना बड़ा सौभाग्य समझो, कि तुम्हारे लिए कोई मामूली यमदूत नहीं, वरन साक्षात् मैं, भारत विभाग के यमदूतों का सरदार भेजा गया हूँ।"

क़ानूनीमल—"अरे! बाबा तू सरदार हो चाहे ख़ानसामा है नर्क में जाना है, तो एक बार नहीं सौ बार जा, मुझसे मतलब? मैं वहाँ क्यों जाने लगा?"

यमदूत सरदार—"क्योंकि ईश्वर की अदालत में तुम अव्वल नम्बर के पापी साबित हो चुके हो। तुम्हारे लिए यही हुकुम है।

क़ानूनीमल—"बिना मुझसे कुछ पूछ-ताछ किए हुए?"

यमदूत सरदार—"पूछने की क्या ज़रूरत? यहाँ तुम्हारी हर बात रत्ती-रत्ती मालूम है।"

क़ानूनीमल—"हुआ करे! मैं क़ानूनीमल हूँ। मैं ऐसा एक-तर्फ़ी फ़ैसला कब मान सकता हूँ? ऐसी धाँधली तो हमारे यहाँ ऑनरेरी मैजिस्ट्रेटी में भी नहीं होती। ईश्वर के यहाँ कोई क़ायदा-क़ानून भी है, कि बस अन्धेर ही अन्धेर है। ज़रा ले तो चल उनके पास। देखूँ, किस क़ानून से मैं पापी ठहराया गया हूँ।"

यमदूत सरदार—"अहाहा! यह ख़्याल छोड़ दो, तुम्हारी वहाँ पहुँच नहीं हो सकती।"

क़ानूनीमल—"क्यों?"

यमदूत सरदार—"परमात्मा केवल अपने भक्तों को ही कभी-कभी दर्शन देने की कृपा करते हैं और किसी को नहीं।"

क़ानूनीमल—"भक्त? यह भक्त क्या बला है?"

यमदूत सरदार—"अरे! यह क्या कहते हो? अरे! ईश्वर

के भक्त वह कहलाते हैं, जो रात-दिन उनका भजन करते और उनके गुण गाते हैं। सोते, उठते-बैठते इन्हीं का नाम जपा करते हैं।"

क़ानूनीमल—"आहाहाहा! साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते कि भक्त के मतलब ख़ुशामदी से है। धत् तेरे की! यहाँ भी ख़ुशामदियों ही का बोल-बाला है। तब यह अन्धेर क्यों न हो। तभी तो जो बात है यहाँ औंधी। हमारे यहाँ एक सिपाही भी रक्खा जाता है तो शकल-सूरत देख कर, डॉक्टरी करा कर, कि कहीं अन्धा, कोढ़ी, लंगड़ा, लूला न हो। और यहाँ एक यमदूत भी मिला, तो अक़ल-समझ से कोसों दूर और शक्ल व सूरत में बिलकुल बेदुम का लङ्गूर।"

यमदूत सरदार—"अरे! अरे! अब तुम मुझे गालियाँ भी देने लगे?"

क़ानूनीमल—"तो क्या बुरा करता हूँ? जैसे देवता वैसी पूजा। एक तो तुम्हारी सूरत ही मार खाने क़ाबिल है। कहो हाँ, दूसरे तुम उचक्कों की तरह मुझे जबरदस्ती दुनिया से उठा लाए। तीसरे तुम्हें बात तक करने की तमीज़ नहीं, मुझे पापी बता कर नर्क में जाने को कहते हो। चौथे तुम ईश्वर के पास भी मुझे नहीं ले चलते। अब इन बातों पर तुम्हीं बताओ ऐसा कौन भलामानुस है, कि जो तुम्हें बिना मारे छोड़ सकता है।"

यमदूत सरदार—(घबड़ा कर) "यह तो अजब बेढब से पाला पड़ा। मर कर भी इसकी ऐंठ न गई, कैसा टर्राता है। तनिक भी

इसे अपने पापों का पश्चात्ताप नहीं। और मुर्दे बेचारे इस वक्त...''

दृश्य १६

मृतात्माओं का पड़ाव

(कई यमदूतों के पहरे में सैकड़ों मृतात्मा रस्सियों से बाँधे हुए अपने पापों पर रोते; सर धुनते हुए अफ़सोस कर रहे हैं।)

मृतात्माएँ—''हे जगरक्षक ! हे परम पिता ! हे कृपानिधान ! सुधि लो, उद्धार करो, मैं घोर पापी हूँ, बहुत पाप किया, मेरे पापों की गिनती नहीं.........''

एक यमदूत—''अभी से आफ़त मचाने लगे पापियों, अभी तो नर्क तक पहुँचे भी नहीं।''

मृतात्माएँ—''दोहाई है, मैं कान पकड़ता हूँ, मैं नाक रगड़ता हूँ, अब नहीं, हाय ! मैंने क्यों इतना पाप...''

[एक यमदूत सरदार का गुस्से में आना]

यमदूत सरदार नम्बर २—क्यों यमदूतों, इतना शोर ?

एक यमदूत—''सरदार जी, ये पापी मानते ही नहीं।''

यमदूत सरदार नम्बर २—''हण्टरों से चुप करो फिर भी न मानें, तो फिर बेहोश कर दो।''

(हण्टरों की मार, चिल्लाहट और अन्त में यमदूत सरदार नम्बर २ के एक इशारे पर सबकी बेहोशी)

दृश्य १७

फिर नवाँ दृश्य पाँचवीं बार

यमदूत सरदार—"तो...तो...क्या...क्या...तुम अपने को पापी नहीं समझते ?"

क़ानूनीमल—"पापी होगा तू और तेरे सात पुश्त । मैं क्यों पापी होने लगा ? इसीलिए तो कहता हूँ, कि ईश्वर के पास ले चल ।"

यमदूत सरदार—"ईश्वर के पास जाने की क्या ज़रूरत ? पहिले मुझसे तो निपट लो । देखो मैं अभी दिखाए देता हूँ, कि तुम कितने बड़े पापी हो !"

क़ानूनीमल—"आ हा हा ! यह मुँह और पुदीने की चटनी ? मैं वकील हूँ । मेरा दिमाग़ फ़ालतू नहीं है, कि किसी से बेकार बक-बक करूँ । अगर मुझसे इस मामले पर बहस करने का शौक़ हो, तो लाओ मेरी फ़ीस दाख़िल करो ।"

यमदूत सरदार—"फ़ीस ? अच्छी बात है । देखो, यदि बहस में मैं जीतूँ तो तुम्हें भीगी बिल्ली की तरह मेरे इशारे पर सीधे नरक को चला जाना पड़ेगा और यदि तुम जीतो, जो कि बिलकुल असम्भव है, तो मेरी कुल शक्ति आप से आप तुम में चली जायगी और तब तुम्हारी आज्ञा के बिना मैं हिल भी नहीं सकूँगा और तुम यहाँ बेधड़क हर जगह आ-जा सकोगे और कोई तुम्हें मृतात्मा न समझेगा ।"

— २ —

क़ानूनीमल—"बस ? ख़ैर ! तुम्हारी औक़ात देख कर यही सही। मगर मुश्किल तो यह है, कि तुम्हारे अक़्ल है ही नहीं। तुम मेरी क़ानूनी बातें समझोगे क्या अपना सर ?

यमदूत सरदार—"मेरे अक़्ल नहीं है ?"

क़ानूनीमल—"बेशक। अगर है, तो बताओ पाप किसे कहते हैं।"

यमदूत सरदार—"क्या तुम्हारे धर्म ने नहीं बताया ?"

क़ानूनीमल—"बस मालूम हो गया। किस धर्म को कहते हो ? दुनिया में तो हज़ारों धर्म हैं। अगर किसी काम को कोई मज़हब अच्छा बताता है, तो दूसरा बुरा। ऐसी हालत में उनकी मदद से भला किस तरह नेकी और बदी की जाँच की जा सकती है ?"

यमदूत सरदार—"क्या तुम अपने धर्म पर विश्वास नहीं करते ?"

क़ानूनीमल—"मैं करता हूँ या नहीं, तुम्हारी बला से। तुम अपनी कहो।"

यमदूत सरदार—"मैं तो धर्म को 'ईश्वर वाक्य' समझता हूँ।"

क़ानूनीमल—"अरे ! बेवक़ूफ़ अपने मुँह पर थप्पड़ मार थप्पड़। ईश्वर को अपने साथ क्यों पाखण्डी बनाता है ? अगर सभी मज़हब ईश्वर के वाक्य हैं, तो वह किस तरह हर मज़हब में यह कह सकते थे, कि यह तो मेरा वाक्य है और बाक़ी सब पाखण्ड है। ऐसा कह कर उन्हें मज़हबी झगड़ों की बुनियाद

डालने की क्या ग़रज़ थी ? जिनमें पड़ कर करोड़ों जानें चली गईं और अभी न जाने कितनी जाएँगी ?"

यमदूत सरदार—"बात तो कुछ-कुछ तुक की मालूम होती है। परन्तु फिर ये धर्म संसार में आए कहाँ से ?"

क़ानूनीमल—"जो लोग अपने ज़माने में सब से ज़्यादा अक़्लमन्द हुए और जिन्होंने ईश्वर को मौजूदगी भाँप कर उनकी कुछ-कुछ बातें समझीं, उन्होंने अपने ज़माने और मुल्क के रहन-सहन और आबोहवा के मुताबिक़ ज़िन्दगी अच्छाई के साथ गुज़ारने के क़ायदे बनाए बस वही मज़हब हो गए। फिर भी आदमी हो की अक़्ल ठहरी, लाख बढ़ जाने पर भो उसमें से ग़ुरूर की बू जा न सकी, इसीलिए हर मज़हब अपने को सच्चा और दूसरे को झूठा समझता है।"

यमदूत सरदार—"अब तो इस गड़बड़झाले में मेरी नीयत डगमगाने और मेरी शक्ति भी कुछ घटने लगी।"

क़ानूनीमल—"ईश्वर एक है। सभी का पैदा करने वाला वही है, हिन्दू, बौद्ध, यहूदी, ईसाई, मुसलमान, पारसी ग़रज़ सारी दुनिया के लोग उनके लिए एक समान हैं। इसलिए अगर वे सचमुच कोई धर्म दुनिया में चलाते, तो बस एक ही जिसके क़ायदे सब के लिए एक होते। जब ऐसा धर्म दुनिया में कोई है ही नहीं तब तुम मज़हब के भरोसे नेकी-बदी, पाप-पुण्य की क्या खाक तमीज़ कर सकते हो ? हम लोग अपनी सफ़ाई में अपने-अपने धर्म की अलबत्ता दोहाई दे सकते हैं। क्योंकि

हमारी अक़ल छोटी है। जिन बातों को चाहे वह बुरी क्यों न हों, हमारे बड़ों ने अच्छी बताई हैं उन्हें अच्छा समझने के लिए हम मजबूर हैं। मगर हमें भला-बुरा समझने के लिए ईश्वर उनकी अक़ल से काम नहीं ले सकते। इसके लिए उन्हें ख़ुद अपनी अक़्ल ख़र्च करनी पड़ेगी ?"

यमदूत सरदार...."परन्तु संसार में तो लाखों प्रकार के मनुष्य हैं। सबके लिए एक समान के नियम भला किस तरह बन सकते हैं।"

क़ानूनीमल—"बन सकते हैं, कि ईश्वर ने बना कर दिखला दिया है। आँखें हों, तो खोल कर देख, उन्होंने तो ऐसे-ऐसे क़ानून बना दिए हैं, कि पेड़-पत्तों से ले कर दुनिया के तमाम जीव-जन्तु के लिए एक समान हैं।'

यमदूत सरदार—"आ हा हा ? ऐसे क़ानून भला किस ग्रन्थ में हैं।"

क़ानूनीमल—"अरे अन्धे ! इनको किताब में नहीं, क़ुदरत के कारख़ाने में देख।"

दृश्य १८

क़ुदरत की फुलवाड़ी

[सिर्फ़ क़ानूनीमल की आवाज़]

देखो माँ की ममता और बचपन की बहार। बकरी के बच्चे कैसी किलोलें कर रहे हैं। उनकी माँ कितने प्यार से उनकी ओर देख रही है। वह बन्दर का बच्चा कितना प्यारा है। कुत्ते

को नज़दीक आते देखकर उसकी माँ किस तरह झपट कर उसे छाती से लगाती और भागती है। वह गाय अपने बछड़े को चाट रही है, वह आदमी उस बछड़े को छेड़ना चाहता है मगर गाय किस तरह पैंतरा बदल कर लड़ने को तैयार हो गई। वह लड़का एक पिल्ला लिए जा रहा है। कुतिया उसके पीछे मारे प्यार के दौड़ी आ रही है। उधर देखो, एक ग़रीब मज़दूरिन अपने बच्चे को बिठाल कर घास छील रही है और उधर रानी साहबा अपनी दासियों के साथ टहलने निकलीं। उनका बच्चा एक दासी की गोद में है। वह मचल कर उतर पड़ा। खेलते-खेलते अलग चला गया। इतने में मधुमक्खियाँ उड़ने लगीं। दासियाँ चिल्ला कर भागीं, मगर रानी अपने बच्चे की तरफ़ दौड़ी और उसे अपनी गोद में छिपा कर वहीं बैठ गईं और मज़दूरिन भी अपने बच्चे को चारों तरफ़ से अपने शरीर के कुल कपड़ों से ढक कर उस पर पड़ जाती है। उसकी नङ्गी पीठ में मधुमक्खियाँ डस रही हैं। मगर परवाह नहीं। इसी तरह.........

दृश्य १९

फिर नवाँ दृश्य छठी बार

यमदूत सरदार—"हाँ प्रकृति के नियम तो सचमुच अटल और सबके लिए एक समान हैं।"

क़ानूनीमल—"इस क़ानून को ईश्वर ने दुनिया को राह बताने ही के लिए बनाया। जिसने इसको जितना समझा उतना ही उसने ईश्वर को पहचाना।"

यमदूत सरदार–"ठहरो ! ठहरो ! ज़रा मुझे सोचने दो...हाँ, यह बताओ, कि यदि धर्मों से ईश्वर का कोई सम्बन्ध नहीं है, तो उन सभों में बहुत-सी बातें मिलती-जुलती क्यों हैं ?"

क़ानूनीमल—"भई वाह ! भैंस के आगे बीन बजाय और भैंस खड़ी पगुराय ! 'अरे ओ अक़्ल के दुश्मन ! जब धर्मों को ईश्वर तक पहुँचने के लिए इसी क़ानून-कुदरत के सहारे अपने क़ायदे-क़ानून बनाने पड़े तब उनमें बहुत-सी बातें ख़ामख़ाही आपस में मिलती-जुलती होंगी।'

यमदूत सरदार—"अब मार लिया है। आ गये घूमकर तुम मेरे चंगुल में। तुम अभी कह चुके हो, कि सभी धर्मों की मिलती-जुलती बातों की जड़ प्रकृति के नियम हैं अर्थात् साक्षात् भगवान् का बनाया हुआ क़ानून। और तुमने वह काम किये हैं, जिनको सभी धर्म बुरा कहते हैं। यहाँ तक कि सभी धर्म एक मत से ईश्वर की पूजा करने की ताक़ीद करते हैं और तुमने वह भी नहीं की।"

क़ानूनीमल—"क्यों करता ? न मैं अपाहिज था न काम-चोर, न ख़ुशामदी और न मुझे ईश्वर के मिज़ाज पर कलङ्क लगाना मञ्जूर था।"

यमदूत सरदार—"इसके क्या मतलब ?"

क़ानूनीमल—"ईश्वर न करे किसी की अक़्ल मोटी हो। ख़ैर इस तरह समझो। फ़र्ज़ करो, कि तुमने एक नाटक-मण्डली खोली...।"

दृश्य २०

स्टेज का ग्रीनरूम

(यमदूत सरदार और क़ानूनीमल एक जगह खड़े हो कर ऐक्टर और एक्ट्रेसों का बनाव-सिंगार निरखते हुए बातें कर रहे हैं)

क़ानूनीमल—"अब इन ऐक्टर और ऐक्ट्रेसों से तुम क्या आशा करोगे और इनसे तुम किस तरह .खुश होगे ?"

यमदूत सरदार—"यही आशा करूँगा और इसी से खुश हूँगा कि यह लोग अपना-अपना......।'

दृश्य २१

स्टेज

(पहिले राधा और कृष्ण का नाटकीय हाव-भाव के साथ गान) उसके बाद हर तरफ़ से सहेलियों का आ कर उसी गाने के सिलसिले में गाना । उसके बाद हरेक सहेली के पास एक-एक कृष्ण का यकायक प्रगट हो कर सहेलियों को आश्चर्य में डालना । फिर उसी सिलसिले में सब का गाना और नाचना)

राधा और कृष्ण

गाना

राधा—चलो हटो कान्हा,
कृष्ण—सुनो मोरी राधा,
राधा—रहिया न मोरी गरेरो ॥

कृष्ण—सुनो सुनो,
राधा—नहिं जाओ कहनवा मानो।
हाय ? आए रहीं सब सखियाँ ताको।
बइयाँ न मोरी मुरेरो॥
[सहेलियों का हर तरफ़ से आ जाना]
सहेलियाँ—ओहो!
क्या ही अनोखा निराला यह ढङ्ग,
कान्धा तो है देख राधा के सङ्ग।
राधा—वाह री सहेली तू कहती है क्या,
कान्धा तो हैं देख तेरे ही सङ्ग।
काहे को नैना तरेरो॥
(हर एक सहेली के पास एक-एक कृष्ण का प्रगट होना)
राधा—आ हा हा हा !
एक सहेली—वाह ! कैसा स्वपन !
दूसरी सहेली—यहाँ जीया है सन !!
तीसरी सहेली—मिले मेरे मोहन !!
सब सहेलियाँ—जग के सब के दिल के जीवन-धन।
राधा और सहेलियाँ—यह तो कन्हइया है मेरो॥

दृश्य २२

फिर बीसवाँ दृश्य दूसरी बार

यमदूत सरदार—(पार्ट करके आए हुए ऐक्टरों की पीठ ठोकते

हुए) "शाबाश! ख़ूब पाट किया! और तुम्हारा काम इनाम के क़ाबिल है! और शाबाश, तुमने भी कमाल किया!"

क़ानूनीमल—(यमदूत सरदार से)—"वह कोने में कौन एक्टर है? वहाँ क्यों बैठा है?"

यमदूत सरदार—(बैठे हुए ऐक्टर के पास जाकर)—"क्यों जी, तुम यहाँ आँख बन्द किये क्यों बैठे हो? अपना पार्ट करने नहीं गए?"

ऐक्टर—(चौंक कर उठता हुआ)—"कौन? मालिक आप हैं! मैं आप ही का नाम जप रहा था। पार्ट में क्या धरा है? जो कुछ है मालिक, सब आप के नाम में है। आप ही के भजन और गुणगान में अपना जीवन बिता कर अपनी अपूर्व भक्ति से आप को प्रसन्न कर रहा हूँ?"

यमदूत सरदार—"धत् तेरी ऐसी-तैसी! क्यों बे ख़ुशामदी टट्टू तू मुझे ख़ुशामद-पसन्द बना रहा है? निकल यहाँ से अपाहिज, कामचोर, कोढ़ी कहीं का।"

(धक्के दे कर निकाल बाहर करता है)

दृश्य २३

फिर नवाँ दृश्य सातवीं बार

क़ानूनीमल—"बस इसी नज़ीर की रू से मैं ही नहीं, बल्कि ईश्वर को रातों-दिन अपनी पूजा से तङ्ग करने वाले, दुनिया से भाग कर उनके नाम को हरदम जपने वाले महापापी और

नरक में जाने क़ाबिल हैं। ये सब दुनिया के स्टेज पर अपना दुनियावी पार्ट करने के लिए भेजे गए थे। मगर ऐसे निकम्मे और काम-चोर निकले, कि उससे जी चुराया, न अपना भला किया और न दुनिया का।"

यमदूत सरदार—"यह तो ऐसा ज्ञान पड़ता है, मानो तुम्हारा कहना सत्य है। और यह क्या ? मेरी शक्ति भी घटती जाती है।"

क़ानूनीमल—"इसकी फ़िक्र मत करो। वह शक्ति इधर आती जाती है।"

यमदूत सरदार—"अच्छा हाँ क्या नाम के। हाँ तुम..."

दृश्य २४

रूपवती वेश्या का कमरा

(क़ानूनीमल बड़े शौक़ से रूपवती वेश्या का नाच देख और गाना सुन रहे हैं)

रूपवती का नाच के साथ गाना

रूपवती—आओ आओ हे राजा बसो मोरे मन में
दिल की कोठरिया को खोले किवड़िया
बैठी हूँ साजे मैं प्रेम सेजरिया
आओ-आओ सँवरिया रहो पलकन में।
रहो अँखियन में, बसो मोरे मन में॥

(नाचते-नाचते अठखेलियाँ करती हुई क़ानूनीमल के पास बैठ जाती है और वह उसे अपनी ओर खींच लेता है)

दृश्य २५

फिर नवाँ दृश्य आठवीं बार

(बैठे हुए)

यमदूत सरदार—"इसको भी सभी धर्म बुरा कहते हैं।"

क़ानूनीमल—"कहते होंगे।"

यमदूत सरदार—"अरे! इतनी लापरवाही? क्या यह पाप नहीं है?"

क़ानूनीमल—"पाप? भला तुझे मालूम भी है, कि पाप है क्या?"

यमदूत सरदार—"जितने भी बुरे कर्म हैं, जिनसे परलोक बिगड़े वह सभी पाप हैं।"

क़ानूनीमल—"फिर लगे धाँधली करने? परलोक और ढचरलोक अपने घर रक्खो। इसीलिए मैंने धर्म-कर्म को पहिले ही अलग कर दिया है। कोई बात अगर बुरी है तो क्यों बुरी है। किस क़ानून से बुरी है। तब तो मैं मान सकता हूँ।"

यमदूत सरदार—"ठहरो! ईश्वर न करे तुम ऐसे क़ानूनी से किसी का पाला पड़े।............अच्छा तुम्हारे ही क़ानून से तुम्हें पछाड़ता हूँ। तुम कहते हो, कि धर्म जीवन की अच्छाई से बिताने के ढङ्ग बताते हैं। इसलिए वे उन्हीं कर्मों को बुरा कहते होंगे, जिनसे संसार को किसी न किसी प्रकार की हानि पहुँचे और जीवन के लिए दुखदाई हों।"

क़ानूनीमल—"बेशक ! देखो, मेरी सङ्गत का असर। तुम्हारी औंधी खोपड़ी अब कुछ-कुछ सीधी हो चली है। अब तुम मानते हो, कि पाप वह है, जो दुनिया के लिए, जिन्दगी के लिए या किसी के लिए नुक़सानदेह हो। अगर न हो, तो वह पाप नहीं है।"

यमदूत सरदार—"जब परलोक का विचार हटा दिया गया तब यह मानना ही पड़ेगा।"

क़ानूनीमल—"अच्छा, अब तुम बताओ, कि तन्दुरुस्ती के लिए क़ुदरती जरूरियात को जबरन रोकना अच्छा है या पूरा करना।"

यमदूत सरदार—"पूरा करना।"

क़ानूनीमल—"जो काम तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा हो, उसे तुम पाप कहोगे या नहीं ?"

यमदूत सरदार—"कदापि नहीं।"

क़ानूनीमल—"तब अगर किसी दिन रास्ते में किसी वजह से पेट जरा जोर से गड़बड़ा उठा तो बजाए अपने घर तक पहुँचने के बम्पुलिस में चला गया, तो तेरे बाप का क्या बिगड़ा ?"

यमदूत सरदार—"कुछ भी नहीं।"

क़ानूनीमल—"बस इसी नजीर से वेश्या के यहाँ जाने की बात समझ ले।"

यमदूत सरदार—"अररर ? हाय ग़ज़ब ! यह क्या ? तुम ठीक कह रहे हो या मेरी बुद्धि ही चकराई हुई है। अच्छा,

अच्छा ! .ख़ैर, वेश्या की बात जाने दो, बाज़ारी सौदा होने के कारण तुम उसे ख़रीद कर अपना माल कह सकते हो। परन्तु, परन्तु हाँ, तुमने तो पराई स्त्रियों को भी ताका है, यहाँ तक कि अपने समाज में इसका अधिक अवसर न पाकर विलायती समाज में भी...!"

दृश्य २६

विलायती बॉल रूम

(बैण्ड बाजे के साथ विलायती नाच ख़ूब धूमधाम से हो रहा है। उसमें क़ानूनीमल भी साहबी ठाठ में एक अति सुन्दरी विलायती युवती के साथ नाच रहे हैं। नाचते हुए छेड़खानियाँ भी करते जाते हैं। उनकी आँखों से शोख़ी और मस्ती का रङ्ग साफ़ ज़ाहिर हो रहा है।)

दृश्य २७

फिर नवाँ दृश्य नवीं बार

क़ानूनीमल—"तो क्या बुरा किया। वह तो मैंने ईश्वर की कारीगरी की क़द्र की है।"

यमदूत-सरदार—"क़द्र ?"

क़ानूनीमल—"और नहीं तो क्या ? फ़र्ज़ करो, कि तुमने बड़े शौक़ और मिहनत से एक फुलवारी लगाई। उसमें बीच-बीच में .ख़ूबसूरत मूर्तियाँ भी रक्खीं। अब वहाँ हवा खाने के लिए तुमने दो आदमी भेजे। एक मुँह लटकाए अन्धे की तरह इस तरफ़ से उस तरफ़ निकल गया, मगर दूसरा जिधर निकला

उधर ही हर फूल, हर कुञ्ज और हर मूर्ति पर मस्त हो कर लट्टू हो गया और वाह-वाह करने लगा। तो तुम किससे ख़ुश होगे ?"

यमदूत सरदार—"दूसरे से, जिसने मेरी चीज़ों का आदर करके मेरी मिहनत सफल की।"

क़ानूनीमल—"तो अब अक़्ल हो तो तू ही समझ ले, कि पापी मैं हूँ या वह, जो दुनिया में सुन्दरियों से आँखे फेर कर ईश्वर की कारीगरी की बराबर बेक़द्री करता रहा ?"

यमदूत सरदार—"अयँ! यह भी दाँव ख़ाली गया ? परन्तु ठहरो......हाँ, तुमने तो उनमें से किसी-किसी से प्रेम भी किया है। अब कहो। भला कौन-सा धर्म या क़ानून पराई स्त्री से प्रेम करना अच्छा कह सकता है ?"

क़ानूनीमल—"मगर वे पराई कब थीं ?"

यमदूत सरदार—क्या उनका विवाह दूसरों के साथ नहीं हुआ था।

क़ानूनीमल—"हुआ होगा। शादी-ब्याह से ईश्वर से मत-लब ? वह रस्म समाज का है या ईश्वर का ?"

यमदूत सरदार—"अयँ ?" (सर खुजलाता है)

क़ानूनीमल—"सुन, ईश्वर ने दुनिया बसाने के लिए सिर्फ़ एक प्रेम का सम्बन्ध दिया है। और यह बस उन्हीं दो औरत-मर्दों में पैदा हो सकता है, जिनको उन्होंने ख़ास तौर से एक दूसरे के लिए बनाया है, औरों के बीच में नहीं ताकि सारी

दुनिया एक ही के पीछे न पड़ जाए। इसीलिए हर रङ्ग और हर मिज़ाज के मर्द के लिए उसी रङ्ग और मिज़ाज को देखो.........'

दृश्य २८

प्रेम की फुलवारी

(भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रेमी जोड़े भिन्न-भिन्न ढङ्ग पर। पहिले सबसे सुन्दर प्रेमी और प्रेमिका की जोड़ी गाने की पहिली दो लाइनें गाती हुई नज़र आती हैं। उसके बाद एक हबशी और हबशिन की जोड़ी उसी सिलसिले में उस गाने की दूसरी दो लाइनें गाती हुई दिखाई पड़ती हैं। इसी तरह बौने प्रेमी और प्रेमिका की जोड़ी गाने की तीसरी दो लाइनें। फिर लम्बे प्रेमी और प्रेमिका की जोड़ी चौथी दो लाइनें। फिर मोटे प्रेमी प्रेमिका की जोड़ी पाँचवीं दो लाइनें तब दुबले प्रेमी प्रेमिका की जोड़ी छठीं दो लाइनें गाकर अन्त में सबकी सब मिल कर गाती हुई दृश्य के सामने आ जाती हैं)

गाना

१ सुन्दर प्रेमी—तुम प्रानन की हो प्यारी।
सुन्दर प्रेमिका—तुम नैनन के हो तारा॥
२ हब्शी प्रेमी—तुम हो मेरी जीवन धन।
हबशिन प्रेमिका—तन मन है तुम पर अरपन॥
३ बावनी प्रेमिका—तुम जीवन के उजियारा।
बावना प्रेमी—तुम नैनन के हो तारा॥

४ लम्बी प्रेमिका—सुन्दर मुखड़ा बाँकी चितवन।
लम्बा प्रेमी—ग़ज़ब का तुम पर भोलापन ॥
५ मोटा प्रेमी—तुम बिन सूनी दुनिया सारी।
मोटी प्रेमिका—तुम पर वारी मैं बलिहारी ॥
६ दुबला प्रेमी—तुम बिन जग अँधियारा।
दुबली प्रेमिका—तुम नैनन के हो तारा ॥
सब एक जगह पर—तुम्हीं ने हमको मारा।
तुम्हीं पे मन मतवारा,
तुम नैनन के हो तारा।

दृश्य २६

फिर नवाँ दृश्य दसवीं बार

क़ानूनीमल—अब अगर समाज बीच में कूद कर चमड़ौधे को बनाती, स्लीपर को चप्पल और सलेमशाही को बूट से मिला कर इस तरह जोड़ा बना दे!"

दृश्य ३०

विवाह-मण्डप

(सुन्दर प्रेमी का हब्शिन प्रेमिका से विवाह हो रहा है यह दोनों विलीन होकर उनके स्थान पर हब्शी दूल्हा और सुन्दर दुल्हिन आ जाती है। इसी तरह इनके ग़ायब होने पर लम्बा दुल्हा और बावनी दुल्हिन, फिर बावना दुल्हा और लम्बी दुल्हिन, फिर मोटा दुल्हा और दुबली दुल्हिन,

फिर दुबला दुल्हा और मोटी दुल्हिन और अन्त में एक गदहा दुल्हा और घोड़ी दुल्हिन दिखाई पड़ती है।]

दृश्य ३१

फिर नवाँ दृश्य ग्यारहवीं बार

क़ाननीमल—"बस इसी तरह से मैंने जिस स्त्री से प्रेम किया होगा, ईश्वर ने उसे खास तौर से मेरे लिए बनाया होगा। वरना प्रेम पैदा ही न होता। अब अगर समाज ने उसे किसी दूसरे को दे दिया था, तो क्या समाज की धाँधली से अपनी चीज़ छोड़ देता? मैं ऐसा बेवकूफ़ न था, कि समाज को ईश्वर से बड़ा समझता? सच पूछो तो जिन्होंने ऐसा नहीं किया, वह अव्व नम्बर के पापी और एक दम नरक में ढकेले जाने क़ाबिल हैं।"

यमदूत—"हाय! हाय! मेरो सारी शक्ति लोप हुई जा रही है। तुमने मुझ पर कोई जादू तो नहीं कर दिया है कि तुम्हारे सारे पाप अब मुझे धर्म ही धर्म दिखाई पड़ रहे हैं। क्या करूँ? अच्छा अब भी एक सवाल करने का कुछ दम है। बस इसी पर इस पार या उस पार। हाँ, झूठ बोलना महापाप है और तुम जब वेश्या के घर से लौटते थे तो बराबर अपनी स्त्री से झूठ बोलते थे और कहते थे कि ज़रा कीर्तन सुनने गया था।"

क़ानूनीमल—"तो क्या कहता, कि मुजरा सुनने गया था? बिल्कुल गावदी ही हो क्या? यह भी कुछ ख़बर है कि

ईश्वर ने आदमियों को अक़्ल किस लिए दी है ? इसीलिए कि मौक़ा-महल देख कर अक़्ल से काम लें। झूठ बोलना बुरा है सही, क्योंकि इससे बहुत सी मुसीबतें पैदा होती हैं मगर जहाँ इससे बला टले और सब झगड़ों से छुट्टी मिल जाये, वहाँ इससे बढ़ कर दूसरा कोई धर्म भी नहीं है। वहाँ सच बोलना पाप है। इसी को कहते हैं डिप्लोमेसी (कूटनीति), दुनिया का सब से बड़ा, ताज़ा और फ़ैशनेबिल क़ानून। समझे ?"

यमदूत-सरदार—(क़ानूनीमल के पैरों पर गिर कर) "बस मान गया! धन्य हो! आप सचमुच बड़े धर्मात्मा हैं। अब सेवक में इतनी भी शक्ति नहीं कि आपकी आज्ञा बिना आपके चरणों पर से उठ सके! अब बताइए, क्या आज्ञा है ?"

क़ानूनीमल—"बस यही, कि मिहरबानी करके अपनी मनहूस सूरत फिर न दिखाइएगा। इसे जल्दी मेरी आँखों के सामने से हटा और जाकर किसी खोह में छिप रह। मगर यह ख़बर फैलाता जा, कि धर्मराज के बेतुके फ़ैसलों से तङ्ग आकर दुनिया ने परलोक की कचहरी का मुआइना करने के लिए यहाँ अपना गुरूघण्टाल भेजा है।

[तीसरी धारा]

दृश्य ३२

यमलोक का एक स्थान

[दो यमदूत दो मृत आत्माओं को, उनकी टाँगों में अलग-अलग बँधी हुई रस्सियों को अपने-अपने कन्धों पर रक्खे हुए खींचते जा रहे हैं।

जिनमें से एक भगुआ भङ्गी है और दूसरा ढबढब पाण्डे। दोनों अचेत दशा में हैं। मगर बजाय ज़मीन पर घसिटने के हवा में लहराते हुए खिंचते जाते हैं।]

यमदूत नम्बर १—(रास्ता चलते)—"जब दुनिया वाले जीते ही आप से आप यमलोक पहुँचने लगे तो जो न हो जाए, वही थोड़ा है।"

यमदूत नम्बर २—(रास्ता चलते)—'मुझे तो उसके मनुष्य होने में सन्देह है। मनुष्यों में भला कहाँ ऐसी शक्ति हो सकती है ?

यमदूत नम्बर १—"अरे भाई, वह मनुष्य काहे को मनुष्यों का गुरूघण्टाल है गुरूघण्टाल। अवश्य ही कोई बड़ा ही बेढब महापुरुष है तभी तो उसकी शक्ति देवताओं से भी बढ़ कर है।"

दृश्य ३३

यमलोक का एक ऊँचा टीला

क़ानूनीमल—(टीले पर अकेले मौज में बैठे हुए)..."अब ज़रा अपनी जीती हुई ताक़त की आज़माइश करनी चाहिए। मगर किस पर !......(इधर-उधर देख कर एक तरफ़ ध्यान से देखते हुए) ओहोहो ! क्या मजे में वह दोनों यमदूत अपने-अपने मुर्दे खींचे लिए जा रहे हैं। अच्छा।"—(अपनी जेब से रूमाल निकाल कर झटकता है,)

दृश्य ३४

फिर बत्तीसवाँ दृश्य दूसरी बार

(दोनों मुर्दों के पैरों से आप से आप रस्सी खुल कर गिर जाती है और दोनों यमदूत ख़ाली अपनी रस्सियाँ ज्यों की त्यों खींचते आगे बढ़ते जाते हैं)

यमदूत नम्बर १—"और सुना? हमारे सरदार का कहीं पता नहीं है।"

यमदूत नम्बर २—"आश्चर्य तो मुझे भी है परन्तु......।"

(बातें करते दोनों दृश्य से बाहर चले जाते हैं।)

(दृश्य फिर पिछली तरफ़ हट जाता है, जहाँ भगुआ और ढबढब पाण्डे हैं)

भगुआ (आँखे मलकर ग़ौर से देखते हुए) 'को आय? ढबढब पाण्डे? अरे! तू हूँ मर गयो? बाप किरिया?"

ढबढब—"कौन, भगुआ भङ्गी?"

भगुआ—हाँ पाण्डे जी हम ही होई। तू मर गयो यू बड़ा नीक भवा, जाने गुसइयाँ।"

ढबढब—"हाँ, हाँ अबे दूर हट। घुसा क्यों पड़ता है?"

भगुआ—"का करी पाण्डे जी। हम नहाते में डूब गएन। गउदान तक करे के मौक़ा नाहीं मिला। तब्बे तो तोहरे मरे से हम निहाल हो गएन निहाल। जाने गुसइयाँ। अब हमार बेड़ा पार होए जाई।"

ढबढब—"तो क्या हम से यहाँ गऊदान कराना चाहता है ?"

भगुआ—"का बताई हीयाँ कहूँ गाय दिखाई नाहीं पड़त है मुला...हाँ तूही एक बाजी कहेयो रहा कि गऊमाता और बाभन देवता का एक समझे के चाही।"

ढबढब—"अच्छा।...परन्तु तनिक दूर रह।"

भगुआ—"तो हमरे करम में गऊमाता नाहीं हैं, नाहीं सही। बाभन देवता तो मिल गए। तू ही आपन पूँछ पकड़ाय के हमें वैतरनी नदी पार कराय दो। बस अब तोहरे भरोसा है। नाहीं हमार मुक्ति न हुई।"

ढबढब—"(चौंक कर) पूँछ ? तू भङ्गी होकर हमारी पूँछ पकड़ेगा ? इतना साहस ? परन्तु...ओहोहो ! हमारे तो पूँछ ही नहीं। तू पकड़ेगा क्या, अपना सर। भाग यहाँ से चाण्डाल !"

भगुआ—'अरे भूल गएन। पूँछ नाहीं गोड़। हाँ तोहार गोड़ पकड़ के हम वैतरनी पँवर जाबे। बस तनिके सहारा चाही। दोहाई पाण्डे जी। भागो न। देखो जनम भर तोहार मैला साफ़ कीन है। अब तनि तुहूँ हम पर दया करो। बड़े भाग से और बड़े जून पर मिले हो। अब तोहें पाय के हम कहूँ छोड़ सकित है ?"

(पाण्डे जी पीछे हट कर एकबारगी प्राण लेकर भागते हैं और भगुआ भी जी छोड़ कर उनके पीछे दौड़ता है।)

दृश्य ३५

यमलोक का दूसरा स्थान

(दोनों यमदूत उसी तरह अपनी-अपनी रस्सी खींचते हुए आ रहे हैं)

यमदूत नम्बर १—"अब तो यार यहाँ कुछ दम ले लेना चाहिये।"

यमदूत नम्बर २—वाह! दोस्त, क्या बात कही है। यही तो मैं भी कहने वाला था।...मगर भाई हमारी रस्सी न जाने क्यों कुछ ढीली मालूम होती है। (घूम कर) अरे! यह क्या? मुर्दा ग़ायब?"

यमदूत नम्बर १—(घूम कर)—'अरे! हमारा भी मुर्दा लापता है! हाय! भगवान यह कैसा अनर्थ?'

यमदूत नम्बर २—"रस्सी खुल जाने से कहीं रास्ते में टपक पड़ा।"

[दोनों लौट कर दौड़ते हुए इधर उधर ढूँढ़ते हैं।]

यमदूत नम्बर १—"कहीं पता नहीं।"

यमदूत नम्बर २—"ऐसा अँधेर? अब क्या करें?...... अच्छा तुम उधर देखो और मैं इधर।"

दृश्य ३६

यमलोक का एक मैदान

(ढबढब पाण्डे प्राण लिए भागते चले आते हैं और भगुआ 'दोहाई पाण्डे जी, दोहाई पाण्डे जी' चिल्लाता हुआ बेतहाशा पीछा कर रहा है)

दृश्य ३७

यमलोक का एक अँधेरा स्थान

(दोनों यमदूत अपने-अपने मुर्दों को ढूँढ़ते हुए अलग-अलग रास्तों से आकर अँधेरे में टकराते हैं। और दोनों एक दूसरे को अपना-अपना मुर्दा समझ कर पकड़ लेते हैं और चिल्लाते हैं।)

दोनों यमदूत—'पकड़ लिया। पकड़ लिया। हत तेरे मुर्दे की ऐसी तैसी ! अब कहाँ जाता है ?'

[दोनों यमदूत आपस में गुथे हुए खड़े रहते हैं, वैसे ही ढबढब पाण्डे दौड़ते हुए आकर ऐसी छलांग मारते हैं कि एक दम दोनों की गर्दन पर सवार हो जाते हैं।]

दोनों यमदूत—"हाय बाप ! यह सर पर कैसा पहाड़ फट पड़ा ?"

(ढबढब पाण्डे को अपनी गर्दनों पर लिए हुए दोनों यमदूत घबड़ा कर एक साथ सरपट भागते हैं और खुले हुए मैदान में निकल आते हैं। वहाँ भगुआ बड़े ज़ोरों से दौड़ता हुआ आकर पीछा करता है।)

भगुआ—(पीछा करता हुआ)—"वह लो, वह तो जोड़ी हाँके निकसा जात है। हाय ! दादा ! अब का करी ?...जै हनुमान सामी की !"

(भगुआ इस ज़ोरों से छलाँग मारता है कि उचक कर एकदम ढबढब पाण्डे की गर्दन पर सवार हो जाता है। दोनों यमदूत चिल्ला कर और तेज़ भागते हैं।)

दृश्य ३८

फिर तैंतीसवाँ दृश्य दूसरी बार

क़ानूनीमल—(ताली बजा कर हँसते हुए) "भाई वाह ! यह खूब रहा ! वाह री ! मेरी ताक़त !

दृश्य ३९

कलयुग महराज का विलास-भवन

(कलयुग महाराज सुन्दरियों के बीच में मखमली गद्दे पर, तकिये की जगह पर एक सुन्दरी के सहारे एक हाथ में शराब का गिलास लिये लेटे-लेटे दूसरे हाथ से जुआ खेल रहे हैं। दो सुन्दरियाँ उनके पैर दाब रही हैं। एक चवँर हिला रही है, और एक पङ्खा झल रही है।'

एक सुन्दरी—"देखिए कलयुग महराज, यह मेरा दाँव है।'

दूसरी सुन्दरी—"चल झुट्ठी, यह मेरा दाँव है।"

तीसरी सुन्दरी—"तुम दोनों शराब के नशे में अन्धी हो रही हो। यह मेरा दाँव है। देख सात पड़े हैं सात।"

पहली—"झूठ उस पर बेइमानी ? छै के दाँव को बदल कर अभी तूने सात कर दिया।"

कलयुग—"यह किसी का नहीं मेरा दाँव है।"

(दाँव पर की बाज़ी के साथ सब के सामने के रुपए समेट लेता है)

सब सुन्दरियाँ—"हाय ! हाय ! आप मेरे रुपए क्यों समेट ले गए ?"

कलयुग—"चुप रह। जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

सब सुन्दरियाँ—"ऐसी बेईमानी ?"

कलयुग—"तो कलयुग के पास सिवाय झूठ, मक्कारी, चोरी, बेईमानी, शराब, जुआ, और व्यभिचार के और क्या धरा है ?"

(रेडियो के समान एक विचित्र रूप के यन्त्र का आप से आप घनघनाना)

कई सुन्दरियाँ—"अरे ! चुप-चुप ! आकाशवाणी !!"

यन्त्र की घनघनाहट के बाद उसमें से आवाज़—'जै ! कलयुगीनाथ की ! जै कलयुगीनाथ की !'

कलयुग—"यह कौन मेरा जै-जैकार कर रहा है। (यन्त्र के पास जाकर) तुम कौन हो ? कहाँ से बोल रहे हो ?"

यन्त्र की आवाज़—"मृत आत्माओं के पड़ाव से यमदूतों का सरदार नम्बर २। आपने ही संसार में पाप का बोझ बढ़ाने का ठेका लिया था ?"

कलयुग—"अच्छा तुम अपना मतलब तो कहो।"

यन्त्र की आवाज़—"परन्तु जान पड़ता है, आपने अपने काम की ओर उचित ध्यान नहीं दिया।"

कलयुग—"अजी यह भूमिका रहने दो। साफ़-साफ़ बताओ मामला क्या है।"

यन्त्र की आवाज़—"संसार का एक आदमी, जो अपने को वहाँ का 'गुरुघण्टाल' बताता है, न जाने किस पुण्य-प्रताप से जीता ही यहाँ पहुँच कर ऐसा ऊधम मचाए हुए है, कि नाक

आराम करने को कहें, क्योंकि उनकी अक़्ल का वह हिस्सा, जिससे हिन्दुस्तान का सरोकार है, करोड़ों बरस से लगातार इन्साफ़ करते-करते अब बिल्कुल घिस गया है। अगर न मन्जूर करें तो अच्छी तरह जाँच करके उनकी ग़लतियाँ उन्हें दिखावें। इस पर भी न मानें तो अपने मुआयने की रिपोर्ट ईश्वर के सामने पेश करके धर्मराज जी की कुर्सी श्रीमान् कलयुग महाराज उर्फ़ बाबू कलयुगीनाथ उर्फ़ मिस्टर शैतान को, जिनका उस पर इस कलयुग के ज़माने में पूरा हक़ हासिल है, दिलवावें और चित्रगुप्त जी के सगे वारिस होने के नाते उनकी कुर्सी ख़ुद लें......(काग़ज फेंक कर) यह क्या ? ऐसी धृष्टता ? बेशक तुम्हारा संसार घमण्ड में बहुत बढ़ गया है। उसके गर्व को शीघ्र नाश करना चाहिये।"

क़ानूनीमल—(अपने पॉकेट बुक पर कुछ नोट करते हुए) Yes ! और कुछ ?'

धर्मराज—"यह क्या लिख रहे हो ?'

क़ानूनीमल—"आपकी बात। मैं पहिले बता चुका हूँ कि मैं यहाँ मुलज़िम नहीं, बल्कि इन्सपेक्टर की हैसियत में मौजूद हूँ। जो कुछ आप कहेंगे या करेंगे, वह सब मेरी रिपोर्ट में शामिल होकर ईश्वर के सामने पेश होगा।"

दृश्य ४५

एक विचित्र स्थान

कलयुग—(अकेले ऐनक लगाए हुए) "वाह भई ! यह चित्र-

गुप्त जी की ऐनक तो .खूब है। यहीं से बैठे कचहरी के भीतर का हाल सब दिखाई दे रहा है। ओहोहो! धर्मराज जी कैसे दुबसट में पड़ गये। शाबाश मिस्टर गुरूघण्टाल शाबाश।"

दृश्य ४६

इजलाल

(फिर चवालिसवाँ दृश्य दूसरी बार)

धर्मराज—"अच्छा तो सब से पहिले आप नर्क की जाँच करना चाहते हैं? सादे दंड का नर्क-भोग प्राणी को संसार ही में भोगना पड़ता है। उसके लिए नर्क यह है–"

दृश्य ४७

(अस्पताल और दृश्य के ऊपरी हिस्से में चाँद की तरफ़ गोलाकार में क़ानूनीमल का सर और दूसरी तरफ दूसरे गोलाकार में धर्मराज जी का भयङ्कर बीमारियों के तड़पते हुए रोगियों के अलावा अन्धे, लङ्गड़े, लूले, घायल, कोढ़ी, इत्यादि का भी दिग्दर्शन)

क़ानूनीमल—"भला इनमें से किसी को यह भी मालूम है कि मुझे यह किस .कसूर की सज़ा मिली है?"

(धर्मराज जी की सूरत चिन्तित हो जाती है)

क़ानूनीमल—"भई वाह! सज़ा मिले और मुलज़िम को अपने जुर्म की खबर भी नहीं? आहा हा हा! अच्छा इन्साफ़ है।"

(एक तड़पता हुआ बच्चा और उसके बाद एक ख़ारिश से परेशान

(भगुआ मारे शेखी के ढबढब पाँडे के मुँह पर से अपना हाथ हटा कर अपनी मूँछे ऐंठता है, वैसे ही ढबढब पाँडे बोल उठता है।)

ढबढब पाँडे—"अरे ! यह चाण्डाल भगुआ भङ्गी है भङ्गी।"

भगुआ—"और यह महाराज ढबढब पाण्डे हैं। बाभन देवता। (ढबढब से) अब कहो हमहू बताय दीन।"

दोनों यमदूतों में से एक—"भगुआ कौन मेरा मुर्दा ?"

दोनों यमदूतों में से दूसरा—"और ढबढब पाँडे, मेरा मुर्दा ?"

अन्य यमदूत लोग—"अरे! यह मुर्दे हैं ? तब तो भई यह अच्छा तमाशा है, आहाहा ?"

दोनों यमदूतों में से एक—"खी खी खी खी पीछे करना, पहिले इन दुष्टों को मार कर हमारे सर से उतारो तो।"

अन्य यमदूतों में से एक—(हँसते हुए) "अहाहा ! अरे भाई तुम लोगों को अपने-अपने मुर्दों को अपनी खोपड़ियों पर सवार कराने का कब से शौक़ पैदा हुआ, यह तो बताओ ? आहाहाहा !.........."

(वैसे ही सब मुर्दे सचेत और बन्धन-मुक्त होकर अपने-अपने यमदूतों पर चढ़ी गाँठ लेते हैं और तब सब यमदूत अपने-अपने मुर्दों को अपनी गर्दनों पर सवार कराये चिल्ला कर इधर-उधर भागते हैं !)

दृश्य ४१

फिर पैंतीसवाँ दृश्य तीसरी बार

क़ानूनीमल—(अकेले हँसते हुए)—"आहाहाहा! अच्छा अब यहाँ नॉन-कोऑपरेशन करा दूँ तब मज़ा आए।"

(एक लिफ़ाफ़ा हवा में तैरता हुआ आकर क़ानूनीमल के सामने रुक जाता है।)

क़ानूनीमल—"यह क्या ? (लिफ़ाफ़ा लेकर उसमें से निमन्त्रण कार्ड निकाल कर पढ़ने के बाद) ओहो! मिस्टर कलयुगीनाथ का निमन्त्रण-पत्र, अब समझा!' ख़ैर यह भी अच्छा है। वह कलयुग तो मैं कलयुग का गुरुघण्टाल, ठठेर-ठठेर अच्छी बदलाई होगी।"

(चार परियाँ उड़ती हुई आकर सामने हाथ जोड़े खड़ी हो जाती हैं)

एक परी—"श्रीमान् को ख़ातिर से लाने के लिए कलयुग महाराज ने हम लोगों को भेजा है।"

क़ानूनीमल—"बड़ी मिहरबानी की। बड़ी मिहरबानी की।"

दृश्य ४२

आकाश

(कुर्सी के समान एक विचित्र आसन पर क़ानूनीमल को बिठा कर चारों परियाँ उड़ाये लिए जा रही हैं)

दृश्य ४३

कलयुग महराज का विलास भवन

(फिर उन्तालिसवाँ दृश्य दूसरी वार)

कलयुग—(बड़े तपाक से क़ानूनीमल की आव भगत करते हुए)

"आइये आइये, आपने हमारा निमन्त्रण स्वीकार करके सच मुच बड़ी कृपा की।"

क़ानूनीमल—"सच पूछिए तो आपने मुझ पर मिहरबानी की; क्योंकि मुझे तो आप से मिलना ज़रूरी था ही।"

कलयुग—"सच कहिए मिस्टर गुरुघण्टाल।"

क़ानूनीमल—"बिल्लकुल सच है मिस्टर शैतान।"

कलयुग—"शैतान !"

क़ानूनीमल—"क्यों, आप इस नाम पर चौंके क्यों ? यह विलायती और अप-टू-डेट टाइटिल तो हम लोगों ने आप को दे रक्खा है क्योंकि कलयुगीनाथ का नाम बिल्कुल हिन्दुस्तानी था और पुराना भी बहुत हो गया था और यह शैतान का नाम दुनिया में इतना मशहूर है कि घर-घर आप इसी नाम से पूजे जाते हैं। वहाँ ईश्वर का नाम तो ख़ाली ज़बान पर होता है, मगर दिल में बसते हैं आप !"

कलयुग—'हाँ ? आहाहाहाहा !'

(अप्सराओं का दृश्य में यकायक आकर नाचना और गाना)

(गाना और नाच)

सुन्दरियाँ—"चढ़ीं भउवें कमान,
चले नयनों का बान;
बचे रहियो जवान !
रँगीले रसीले अलबेले जवान !!
नजरियों में मोरी है स्वर्गो नरक।

चितवन में अमृत व विष की छलक !
जिसे चाहूँ जिलाऊँ मैं मारूँ, निगाहों को तान !!
चढ़ीं भउवें कमान !"

× × ×

(दृश्य छोटा होकर केवल कलयुगीनाथ और क़ानूनीमल दिखाई पड़ते हैं)

कलयुग—"परन्तु ऐसे आनन्द की घड़ी में आप इतने चिन्तित क्यों हैं ?"

क़ानूनीमल—"नहीं तो ।"

(दृश्य बड़ा हो कर नाचने वालियों के साथ दिखाई पड़ता है । नाच ज्यों का त्यों जारी है, मगर बिला गाने के, और सब के हाथ में शराब का गिलास है)

कलयुग —"तो फिर यह दौलत की चकाचौंध, यह शराब का दौर, यह परियों का नाच आप को पसन्द क्यों नहीं आता ?"

क़ानूनीमल—"आता क्यों नहीं ! खूब है । क्या कहना है । मौज से रहना और मज़े करना तो सिर्फ़ आप ही जानते हैं । इसीलिए तो दुनियाँ में सौ में सवा सौ आप के पुजारी हैं और ऐसे, कि आप के आगे ईश्वर-तक को भूले हुए हैं ।

(*नाच के साथ फिर गाना*)

सुन्दरियाँ—"लाई सुधा रस भर-भर प्याला ।
दुख सन्ताप को हरने वाला ।
पीले जी भर, बन मतवाला !

पाप-पुण्य, सब का मुँह काला।
मौज से रहना, कुद-कुद मरना,
यही स्वर्ग नरक है जान!
चढ़ी भउवें कमान !!"

(दृश्य फिर छोटा हो जाता है)

कलयुग—"आख़िर बात क्या है, कि आपकी सुस्ती दूर नहीं होती। कुछ न कुछ इसकी वजह होगी ज़रूर।"

क़ानूनीमल—"यही कि राजा की ताक़त प्रजा से और देवता की ताक़त उसके पूजनेवालों से। मगर आपके इतने पुजारी होने पर भी आपकी यहाँ ऐसी बेइज़्ज़ती ?"

कलयुग—"कैसे ?"

क़ानूनीमल—"आपका यहाँ कुछ भी अख्तियार नहीं। धर्मराज की कचहरी में आपकी पैठ तक नहीं। आपको यह भी पता नहीं, कि धर्मराज आपके पूजने वाले और वालियों को कैसी ज़लील निगाहों से देखते हैं।"

कलयुग—"सच ?"

क़ानूनीमल—"यही दिखाने के लिए तो मैं दुनिया से ७३ करोड़ ७५ लाख ७२ हज़ार ७८ मील का सफ़र कर के यहाँ आया हूँ।"

(दृश्य फिर बड़ा हो जाता है और नाच बिना गाने के जारी है)

कानूनीमल—'आपकी भक्तिनें कैसी प्यारी और ख़ूबसूरत हैं। आहाहा। एक-एक चितवन एक-एक अदा पर लाखों दिल निसार हो रहे हैं। फिर भी जिनके हाथ में यहाँ अख्तियार और

हुकूमत है, अफ़सोस! वह इन्हें क्या समझते हैं और किन निगाहों से देखते हैं, आप ख़ुद देख लीजिये।'

(क़ानूनीमल रूमाल झटकता है और वैसे ही सब सुन्दरियाँ यकायक चुड़ैलें बन जाती हैं)

कलयुग—"अयँ! एक दम चुड़ैल!"

(फिर दृश्य छोटा हो जाता है)

क़ानूनीमल—'और आपके पुजारी जो आपको पूजने के नाते सब आप ही की तरह रँगीले रसीले छैल छबीले हैं, मगर उनकी नज़र में क्या है, ज़रा शीशे में अपनी सूरत अपनी आँखों से देख लीजिये।

(क़ानूनीमल रूमाल झटकता है और कलयुगीनाथ यकायक घृणित रूप में बदल जाता है)

कलयुगी—"हाय! ग़ज़ब! यह क्या, साक्षात् चाण्डाल!"

क़ानूनीमल—"तभी तो वह बेचारे आँख मूँदे सीधे जहन्नुम को ढकेल दिये जाते हैं।"

कलयुग—"उफ़! सचमुच यह मेरी बड़ी बेइज़्ज़ती है।"

क़ानूनीमल—"तभी तो दुनिया वालों ने आपको धर्मराज की कुर्सी दिलवाने के लिये मुझे यहाँ भेजा है। जिससे आपके पूजनेवालों पर धाँधली न होने पावे और आपकी शान में बट्टा न लगे। अख़्तियार है तो शान, इज़्ज़त, क़द्र, सब कुछ है, वर्ना कोई कम्बख़्त फूटी आँख से भी नहीं देखता।"

कलयुग—"सच है, बिल्कुल सच है। अब याद आया। अख्तियार ही न होने की वजह से तो एक मामूली यमदूत सरदार ने भी मुझे जवाबदेही देने की धमकी दी थी। बस अब यह अपमान नहीं सह सकता। आज मेरी आँखें खुलीं। मगर हाँ, क्या मुझे धर्मराज की कुर्सी मिल सकती है?"

क़ानूनीमल—"जिसके नाम पर सौ में सवा सौ पर्चा डालने वाले हों, उसके लिये क्या मुश्किल है? आप किसी बहाने सिर्फ़ चित्रगुप्त बाबा को धर्मराज से अलग अटकाए रखिये, फिर देखिये, मैं आपके लिये क्या कर दिखाता हूँ।"

कलयुग—"मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। मगर मेरी सूरत......"

क़ानूनीमल—"अभी ठीक हुई जाती है।"

(क़ानूनीमल—रुमाल झटकता है और कलयुग अपने असली रूप में बदल जाता है)

दृश्य ४४

धर्मराज का इजलास

(धर्मराज आकर अपने इजलास पर विराजमान होते हैं और कई यमदूत अरदली की वर्दी में मौजूद हैं और "धर्मराज महाराज की जय" की हाँक लगाते हैं)

धर्मराज—"आज अभी तक चित्रगुप्त महाराज नहीं पधारे।"

एक अरदली—"धर्मावतार, आज उनकी त्रिलोकदर्शी ऐनक गुम हो गई है। उसी के ढूँढ़ने में लगे हैं।"

धर्मराज—"यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। जाओ सब लोग मिलकर जल्दी उसे ढूँढ़ निकालो, नहीं तो सब काम बन्द हो जायगा।.........परन्तु हाँ, सुनो, क्या सचमुच संसार का गुरूघण्टाल यहाँ आप से आप जीता ही आ गया है?"

(वैसे ही यकायक क़ानूनीमल आकर मौजूद हो जाते हैं)

क़ानूनीमल—"जी हाँ! योर ऑनर! (Your Honour) खिदमत में हाजिर हूँ।"

धर्मराज—"आप ? आप ? अरे! आप ही गुरूघण्टाल हैं ? कैसे-कैसे......यहाँ कैसे पधारे ?"

क़ानूनीमल—"रेडियो के जरिये से।"

धर्मराज—'आयँ! रेडियो से ? मृत्युलोक ने यहाँ तक उन्नति कर ली। समाचार और चित्र भेजने के अतिरिक्त समूचा आदमी भी भेजने लगे और यहाँ तक ? तब सचमुच वह देवलोक के बराबर हो गया।"

क़ानूनीमल—"बल्कि उससे भी बढ़ गया।"

धर्मराज—"वह कैसे ?"

क़ानूनीमल—(एक काग़ज़ देकर) "इसी से सब मालूम हो जायगा और मेरे यहाँ आने का भेद भी खुल जायगा।"

धर्मराज—(काग़ज़ पढ़ते हुए) हम दुनिया वाले एकमत होकर मिस्टर गुरूघण्टाल को परलोक के लिये अपना मुखिया चुनते हैं। ताकि वह वहाँ जाकर श्री० धर्मराज और चित्रगुप्त महाराज को पचपन-साले के क़ानून के मुताबिक अब पेनशन लेकर

आराम करने को कहें, क्योंकि उनकी अक़्ल का वह हिस्सा, जिससे हिन्दुस्तान का सरोकार है, करोड़ों बरस से लगातार इन्साफ़ करते-करते अब बिल्कुल घिस गया है। अगर न मन्ज़ूर करें तो अच्छी तरह जाँच करके उनकी ग़लतियाँ उन्हें दिखावें। इस पर भी न मानें तो अपने मुआयने की रिपोर्ट ईश्वर के सामने पेश करके धर्मराज जी की कुर्सी श्रीमान् कलयुग महाराज उर्फ़ बाबू कलयुगीनाथ उर्फ़ मिस्टर शैतान को, जिनका उस पर इस कलयुग के ज़माने में पूरा हक़ हासिल है, दिलवावें और चित्रगुप्त जी के सगे वारिस होने के नाते उनकी कुर्सी ख़ुद लें......(काग़ज फेंक कर) यह क्या ? ऐसी धृष्टता ? बेशक तुम्हारा संसार घमण्ड में बहुत बढ़ गया है। उसके गर्व को शीघ्र नाश करना चाहिये।"

क़ानूनीमल—(अपने पॉकेट बुक पर कुछ नोट करते हुए) Yes ! और कुछ ?'

धर्मराज—"यह क्या लिख रहे हो ?"

क़ानूनीमल—"आपकी बात। मैं पहिले बता चुका हूँ कि मैं यहाँ मुलज़िम नहीं, बल्कि इन्सपेक्टर की हैसियत में मौजूद हूँ। जो कुछ आप कहेंगे या करेंगे, वह सब मेरी रिपोर्ट में शामिल होकर ईश्वर के सामने पेश होगा।"

दृश्य ४५

एक विचित्र स्थान

कलयुग—(अकेले ऐनक लगाए हुए) "वाह भई ! यह चित्र-

गुप्त जी की ऐनक तो .खूब है। यहीं से बैठे कचहरी के भीतर का हाल सब दिखाई दे रहा है। ओहोहो! धर्मराज जी कैसे दुबसट में पड़ गये। शाबाश मिस्टर गुरुघण्टाल शाबाश।"

दृश्य ४६

इजलाल

(फिर चवालिसवाँ दृश्य दूसरी बार)

धर्मराज—"अच्छा तो सब से पहिले आप नर्क की जाँच करना चाहते हैं ? सादे दंड का नर्क-भोग प्राणी को संसार ही में भोगना पड़ता है। उसके लिए नर्क यह है—"

दृश्य ४७

(अस्पताल और दृश्य के ऊपरी हिस्से में चाँद की तरफ़ गोलाकार में क़ानूनीमल का सर और दूसरी तरफ दूसरे गोलाकार में धर्मराज जी का भयङ्कर बीमारियों के तड़पते हुए रोगियों के अलावा अन्धे, लङ्गड़े, लूले, घायल, कोढ़ी, इत्यादि का भी दिग्दर्शन)

क़ानूनीमल—"भला इनमें से किसी को यह भी मालूम है कि मुझे यह किस .कसूर की सज़ा मिली है ?"

(धर्मराज जी की सूरत चिन्तित हो जाती है)

क़ानूनीमल—"भई वाह ! सज़ा मिले और मुलज़िम को अपने जुर्म की खबर भी नहीं ? आहा हा हा! अच्छा इन्साफ़ है।"

(एक तड़पता हुआ बच्चा और उसके बाद एक ख़ारिश से परेशान

कुत्ता दिखाई पड़ता है)

क़ानूनीमल—"ज़रा इस नासमझ बच्चे को तो देखिये और इस परेशान कुत्ते को। ये बेचारे बेज़बान पाप-पुण्य क्या जानें ? ये नासमझ कोई पाप करने लायक़ तो थे भी नहीं। फिर इन पर यह ज़ुल्म का पहाड़ क्यों ढाया गया ?

धर्मराज—यह लोग अपने पूर्वजन्म के पाप का दण्ड भोग रहे हैं।"

दृश्य ४८

इजलास

(फिर चवालिसवाँ दृश्य तीसरी बार)

क़ानूनीमल—'आहा हा हा ! अच्छी कही। इस जन्म के जिस पाप की सज़ा मिलती है उसको तो कोई जानता ही नहीं। उस पर दूसरे जन्म का ख़्याल भला किसको रहता है ?"

धर्मराज—"नहीं, दण्ड देने का यह नियम, इसलिए रक्खा गया है कि जीव मरता नहीं, केवल अपना चोला बदलता है।"

क़ानूनीमल—"ज़रा यह तो बतलाइए कि करोड़ों बरसों में भी इस तरह आप कितनों को इस बात के समझाने में कामयाब हो सके हैं ? सिवाय हिन्दुओं और इने-गिने फ़िलॉसफ़रों के और भी कोई आवागमन को मानता है ? आदमी ज़रा सी ठोकर खाकर समझ जाता है और आप इतने दिनों तक भी इस ग़लती को समझ न सके ? बकरे की जान गई और खाने वाले को स्वाद भी न मिला !

दृश्य ४६

एक विचित्र स्थान

फिर पैंतालिसवाँ दृश्य दूसरी बार

कलयुग—(ख़ुशी में ताली बजाता हुआ)"वेल डन (Well done) मिस्टर 'गुरुघण्टाल' वेलडन।"

दृश्य ५०

इजलास

(फिर चवालिसवाँ दृश्य चौथी बार)

क़ानूनीमल—"अच्छा, अब अपने नर्क लोक का नर्क भी ज़रा दिखाइये।"

धर्मराज—"देखिए।"

दृश्य ५१

नर्क लोक

(आकाश में सूर्य की भाँति आग की लपटों का एक गोला जगमगा रहा है। नज़दीक आने पर हर तरफ़ आँच दिखाई पड़ती है। और उस में से भिन्न-भिन्न प्रकार की हृदय-विदारक चिल्लाहट सुनाई पड़ती है। और आग की लपटें उछल-उछल कर हिन्दी में लफ़्ज़ "नर्क" उसके बाद उर्दू में लफ़्ज़ "दोज़ख़" और अन्त में अङ्गरेज़ी में लफ़्ज़ "हेल" (Hell) का रूप धारण करती हैं।

दृश्य और भी नज़दीक आता है। उस वक़्त आग की लपटों के भीतर पापी आत्माएँ नर्क भोग करती और चिल्लाती हुई एक-एक करके नज़र आती हैं और साथ ही धर्मराज की आवाज़ भी सुनाई पड़ती है)

धर्मराज की आवाज़—(आग की लपटों में एक उल्टी टँगी हुई पापी आत्मा के दृश्य पर)—'यह अत्याचारी है।'

(एक पापी के दृश्य पर जिसकी दोनों टाँगें ख़ूब फैला कर ज़ँजीरों में बँधी है और सीने पर धधकती हुई बर्छियाँ आप से आप चल रही हैं)

"यह विश्वासघाती है।"

(तीसरे दृश्य पर जिसमें एक बँधे हुए पापी की ज़बान में एक जलती हुई लोहे की सलाख़ ऊपर नीचे चल रही है)

"यह झूठ बोलने वाला है।"

(चौथे दृश्य पर जहाँ एक पापिनी लोहे की कीलों के पलँग पर चित बँधी है और उपर से धधकते हुए हथौड़ों की मार आप से आप पड़ रही है)

"यह व्यभिचारिणी है।"

क़ानूनीमल की आवाज—ऑफ़ुल ! मोस्ट हॉरिबुल मोस्ट इनह्यूमन ! (Awful, most horrible, most inhuman) बस इस बेचारी का ज़रा नम्बर नोट कर लेने दीजिए और अब चल कर अपने स्वर्ग लोक की भी झाँकी दिखाइए।'

दृश्य ५२

स्वर्गलोक

(पहिले सुहावने आकाश में चाँद की तरह एक लुभावना गोला दिखाई पड़ता है और उसके बीच में रङ्गबिरङ्गी फुलझड़ियाँ छूट रही हैं। जिसके

फूल सामने आकर शब्द "स्वर्ग" उसके बाद उर्दू में लफ़्ज़ "बिहिश्त" फिर अङ्गरेज़ी में लफ़्ज़ "हेवन" (Heaven) का रूप धारण करते हैं।

गोलाकार नज़दीक आकर अत्यन्त ही रमणीक और मनोहर स्थान में बदल जाता है। जहाँ आकाश में फूलों के विमानों पर, नीचे नहरों में फूलों की नावों पर और फुलवारी में फूलों के झूलों पर पुण्यात्मा लोग विहार कर रहे हैं। जगह-जगह रङ्ग-बिरङ्गे फ़ुवारे छूट रहे हैं। धर्मराज और क़ानूनीमल टहलते हुए आते दिखलाई पड़ते हैं)

धर्मराज—"कहिए कितना सुन्दर और रमणीक है।"

क़ानूनीमल—"मगर न सिनेमा न थियेटर। न ट्राम न मोटर। न रेडियो न टेलीविज़न। न ह्विस्की न सोडा। दिलचस्पी का कोई भी सामान नहीं।"

(बातें करते हुए एक फूलों के झूले के पास पहुँच कर, जिस पर एक महात्मा उर्ध्वबाहू ध्यान में मस्त बैठे हैं)

क़ानूनीमल—"अख़्ख़ाह! ज़रा वाह सुखानन्द जी को देखिए। कैसा पनशाखा की तरह हाथ उठाए हैं। क्या कहना है। (अपने पॉकेटबुक में नोट कर के) बस मेरा काम हो गया।

दृश्य ५३

चित्रगुप्तजी का ध्यान-स्थान

(चित्रगुप्त जी ध्यान करने की तैयारी में हैं और उनके सामने हाथ जोड़े एक यमदूत खड़ा है)

यमदूत—"चित्रगुप्त महाराज की जै ! श्री धर्मराज जी ने कहा है कि ऐनक मिले या न मिले आप शीघ्र ही चले चलें। बड़ी विकट समस्या आ खड़ी हुई है।"

चित्रगुप्त--"ऐनक के लिए मैं परमात्मा का अब ध्यान करने जा रहा हूँ। अभी उसे लेकर उपस्थित होता हूँ।"

दृश्य ५४

इजलास (फिर चवालिसवाँ दृश्य चौथी बार)

[इस बार श्री० धर्मराज के इजलास में एक तरफ नर्क भोगनी मन मोहनी वेश्या और दूसरी तरफ़ स्वर्ग वासी महात्मा उर्धबाहू खड़े हैं।]

धर्मराज—"लीजिए, गुरुघण्टाल जी यह नर्क भोगिनी वेश्या और बैकुण्ठवासी महात्मा ऊर्धबाहू दोनों आपके इच्छानुसार यहाँ उपस्थित हैं। अब बताइये इनके सम्बन्ध में आप क्या जानना चाहते हैं ?"

क़ानूनीमल—"सिर्फ़ यही कि यह बेचारी फूल से भी नाज़ुक परी होकर नर्क में क्यों ढकेली गई और इन पनशाखानन्द की किस ख़ूबी पर स्वर्ग की मिट्टी पलीद की गई।"

धर्मराज—"शिव ! शिव ! महात्मा जी को आप यह क्या कह रहे हैं। यह योगी हैं तपस्वी हैं, हर प्रकार से पूज्य हैं। इन्होंने युवा होते ही संसार को त्याग कर बारह बरस तक—"

दृश्य ५४—(अ)

(महात्मा ऊर्धबाहू कीलों के आसन पर तपस्या कर रहे हैं)

धर्मराज की आवाज़—"कीलों के आसन पर तपस्या की। उसके बाद--"

दृश्य ५४—(ब)

(महात्मा जी आग की आँच के ऊपर उल्टे टँगे झूल रहे हैं)

धर्मराज की आवाज़—"बारह बरस तक आग की लपट में अपनी आत्मा को तपा कर स्वच्छ किया।"

दृश्य ५५

इजलास (फिर चवालिसवाँ दृश्य छठी बार)

धर्मराज—"और उसके बाद ४० बरस तक अपनी एक बाँह उठा कर ईश्वर का जाप किया।"

क़ानूनीमल—"तब जनाब यह कहाँ का इन्साफ़ है कि जिस बेचारे ने जिन्दगी भर अपने शरीर को कोंचवा कर अपनी बाँह को सुखा कर हर तरह नर्क में रहने की प्रैक्टिस की उसे आप स्वर्ग में रहने को भेजें। स्वर्ग तो उनके लिये नर्क से बराबर है। जिस की जिन्दगी रेगिस्तान में कटी हो वह भला बर्फ़ में कै दिन रह सकता है?

धर्मराज—"तो तो तो क्या इनकी ऐसी कठिन तपस्या का कुछ भी महत्व नहीं है?"

क़ानूनीमल—"तपस्या का महत्व? आ हा हा हा! बाँह सुखा देने से ईश्वर की कौन-सी शान बढ़ गई? दुनिया को क्या

फ़ायदा पहुँचा ? या ख़ुद उन्हीं का क्या भला हुआ ? राम राम ईश्वर की देन पर ऐसी चट्टी झाड़ू फेरी। इसका अगर कुछ भी महत्व है तो यही कि उन्होंने तकलीफ़ सहने की अपनी ताक़त इतनी बढ़ा ली है कि यह महात्मा जी नर्क के लिये बिल्कुल फ़िट कैन्डीडेट (Fit Candidate) हैं। इन्हें वहाँ ज़रा भी तकलीफ नहीं हो सकती।"

दृश्य ५६

विचित्र स्थान

(फिर पैंतालिसवाँ दृश्य तीसरी बार)

कलयुग—(ताली बजाते हुए) इक्सिलेंट ! (Excellent) वाह रे मेरे गुरूघण्टाल ! धर्मराज जी को कैसा निरुत्तर किया है। बग़ले झाँक रहे हैं। आ हा हा हा !

दृश्य ५६

इजलास (फिर चवालिसवाँ दृश्य पाँचवीं बार)

क़ानूनीमल—"हाँ अब ज़रा मिहरबानी कर के यह बताइये कि अगर आप को घोड़ा रखना हो तो उसे आप घास दाना देंगे या माँस मछली। पानी में रखेंगे या हवा में।"

धर्मराज—"जो जन्म से जो खाता और जिस तरह रहता आया है उसे वही खिलाना और उसी तरह रखना पड़ेगा।"

क़ानूनीमल—"तब जनाब यह मनमोहनी वेश्या—"

दृश्य ५६—(अ)

(मनमोहनी वेश्या अपने प्रेमियों के बीच में क़ानूनीमल के नीचे लिखे हुये शब्दों के अनुसार रङ्ग रेलियाँमना रही है)

क़ानूनीमल की अवाज़—"सदा प्यार की आँखों में पली। फूलों की सेज पर आराम करती रही। मौज से गुलछर्रे उड़ाती रही। नाच गानों में रँगरेलियाँ मनाती रही—"

दृश्य ५७

इजलास (फिर चवालिसवाँ दृश्य सातवीं बार)

क़ानूनीमल—"उसे हाँ उसे नर्क में डाल कर काँटेदार पलङ्ग पर सुलाने की आप कैसे भूल कर बैठे ? भला यह फूल की कली ईश्वर ने नर्क की आग में जलने के लिये बनाई थी ?"

धर्मराज—"प–प– परन्तु यह पापिनी है, व्यभिचारिणी है इसे दन्ड देना आवश्यक था। उस ने सैकड़ों ही पुरुषों को खाई में ला गिराया।"

क़ानूनीमल—"अच्छा तो पहले यह बतला दीजिये कि स्त्रियाँ संसार में क्यों पैदा की गईं और उनकी सब से बड़ी ख़ूबी क्या है जिन से वे स्वर्ग की हक़दार होती हैं ?"

धर्मराज—"पुरुष जाति की मोहनी बन कर तन मन से सेवा और सहायता करने के लिये स्त्री जाति की उत्पत्ति हुई। यह गुण सब से अधिक पतिव्रता में होता है। वह अपने पति को देवता से बढ़ कर पूजती और सेवा करती है। और इसी सेवा धर्म के प्रताप से वह बैकुण्ठ की अधिकारिणी होती है।"

क़ानूनीमल—"तो जनाब एक पुरुष को सेवा का यह फल है तो जिसने सौ पुरुषों की सेवा करने का दम और क़ाबिलियत हो उसको कितना बड़ा फल होना चाहिये। 'ज़रा हिसाब लगाकर देखिए तो।

धर्मराज—(विचलित होकर एक यमदूत से) "लपक कर देखो श्री चित्रगुप्त जी आ रहे हैं। हिसाब का मामला पेश हो गया।"

क़ानूनीमल—"यह पापिनी होती तो भला मंगला मुखी कहलाती ? इसका दर्शन शगुन माना जाता ? इसने दुनिया के साथ कैसी भलाई की है ज़रा इस को भी तो देख लीजिये।"

दृश्य ५८

शून्य दृश्य

१—मामूली आदमी—(सोच में) "पैसा ! पैसा ! कहीं पैसा नहीं कोई मज़दूरी भी नहीं देता। हत्तेरे ज़माने की।"

२—उसकी जगह पर एकाएक दूसरा आदमी प्रगट होकर—"कॉलेज की डिग्रियाँ लिये मारे-मारे फिरो कहीं चार पैसे का ठिकाना नहीं। अफ़सोस !"

३—उस की जगह पर एक दूकानदार—"सुबह से शाम तक दूकान पर बैठे मक्खियों मारो। कोई ख़रीदार नहीं। हाय रे कम्बख़्ती !"

४—फिर एक वकील—"दिन भर कचहरी की ख़ाक छानो और अपने कर्मों पर रोते घर लौट आओ। ऐसा ज़माना ?"

५—फिर एक डॉक्टर—"बीमार दनादन मरते जाते हैं। फिर भी इलाज का किसी में दम नहीं। मुल्क में ऐसी कङ्गाली ?"

६—फिर एक देशसेवक—"पैसों पर तो पूँजी वाले ताला लगा कर अजगर की तरह बैठ गये पैसा कहाँ से आये जिससे संसार का काम चले ?"

दृश्य ५९

सड़क

सेठ हजारीमल—(चलते चलते रुक कर)—"बाजार जाऊँ कि लौट जाऊँ।......(अपनी मुट्ठी खोल कर)—अरे मेरो प्यारो रुपइयो। तेरे को भुनाने के पहले एक नजर देख तो लूँ। अरे इतनो पसीनों ? नहीं नहीं तू रो रहा है। मत रो मत रो मेरे कलेजे के टुकड़ों। नहीं; भुनाऊँगा नहीं।

(लौट पड़ता है)

दृश्य ६०

(हज़ारीमल का कमरा)

हजारीमल—(आकर तिजोरी में रुपया रखते हुए)—"अरी ! मेरी प्यारी तिजोरी ले अपनो रुपयो ले। तू तो मेरो प्राण है तेरो को तो देख देख जीता हूँ।

बाहर से आवाज आती है—"सेठ जी अजी ओ सेठ हजारीमल जी।"

दृश्य ६१

हज़ारीमल का द्वार

एक विलक्षण पुरुष—"जैगोपाल जी सेठ जी। बड़े सङ्कट में पड़ कर सेवा में हाजिर हुआ हूँ। लड़की की शादी के लिये पाँच सौ रुपये की बड़ी सख्त जरूरत है—"

हज़ारी—"परन्तु आज कल रुपयो देना और प्राण देना दोना बरोबर है। सोलह आणे की जगह अब दे। आणे भी नहीं वसूल होते। कचहरी तक पहुँचते ही रुपया अठन्नी भर रह जाता है। उस पर किस्त-फिस्त के बखेड़ा। वसूल होते होते बस दूअन्नी मिलती है उस पर जगह जमींदारी में अब आग लग गई। न लगान न बेगार न बेदखली। किस बिरते पर अब कोई रुपइयो दे। इसलिये—"

विलक्षण पुरुष—हाँ कहिए-कहिए। इसलिए क्या ?

हज़ारी—"यदि हजार रुपइयों का खरा माल वंधक रख कर हजार रुपयों का काग़ज़ लिखो तो पाँच सौ दे दूँगा।"

विलक्षण पुरुष—"हाय! हाय! हज़ार का माल जो मेरे पास होता तो क़र्ज़ा क्यों माँगता ? उस पर पाँच सौ के लिये हजार की दस्तावेज़ ?

हज़ारी—"हाँ जी हाँ! न मन्जूर हो अपणे घर जाओ। म्हारे पास क्या करने आये ? जाओ जाओ अपने क़ानून से माँगो जो म्हारे गले पर छुरी चला रहा है।"

(भीतर जाकर द्वार बन्द कर देता है)

विलक्षण पुरुष—"सचमुच पूँजीवालों से रुपया निकलवाना मुशकिल है । अच्छा अब दूसरी युक्ति से काम लूँ । आहा ! सेठ लखीसाह और सेठ रोकड़मल दोनों इधर ही आ रहे हैं ।

(एकाएक भिखमंगे के रूप में बदल जाता है)

दृश्य—६२

रास्ता

विलक्षण पुरुष—(भिखमंगे के रूप में सेठ लखीसाह और रोकड़मल का पीछा करते हुये) "ईश्वर भला करे सेठ जी । चार दिनों का भूखा हूँ । एक पैसा दया कीजिए एक पैसा ।"

लखीसाह—"चल चल दूर हो । बड़ो पैसो माँगने आयो और समूचो एक पैसो ? यह अन्धेर तो देखो सेठ रोकड़-मल जी ।"

रोकड़मल—"हाँ जी सेठ लखीसाह । म्हारो तो सुनते ही प्राण छूट गयो । एक पैसो का घी तो मैं साल भर खाता हूँ और यह पाजी एक पैसो भीख माँगता है । डाकू है डाकू ।"

लखीसाह—"अयँ ? इतनों फिजूलखर्ची ? अजी मैं तो एक पैसो का घी दस बरस से खा रहा हूँ और जन्म भर खाऊँगा फिर भी खतम नहीं होगा ।"

रोकड़—"यह कैसे ?"

लखीसाह—"आहाहाहा ! पहिले आप अपनी बताइये ।"

दृश्य ६२—(१)

रोकड़मल का चौका

रोकड़मल—(एक हाथ में शीशी लिये और गिन-गिन कर भोजन करते हुए)—"एक दो तीन चार पाँच । अब तनिक घी का स्वाद ले लूँ । (शीशी सूँघ कर)—आहाहाहा ! घी का पूरा आनन्द आ गया । अब फिर पाँच कौर के बाद घी का आनन्द लूँगा ।

दृश्य ६२—(२)

लखीसाह का चौका

लखीसाह—(घी की शीशी सामने रख कर और उसे देख-देख कर भोजन करते हुए)—"वह घी ! (कौर मुँह में रखता है) वह घी ! (कौर मुँह में रखता है) आहाहा ! हर कौर में घी ही घी ।"

दृश्य ६३

रास्ता (फिर दृश्य ६२ दूसरी बार)

विलक्षण पुरुष—(भिक्षुक के रूप में)—"हात तेरे कञ्जूस की ! अच्छा अब जरा सेठ करोड़ीमल की खबर लूँ । वह दो पैसा दान करने का बचन दे चुके हैं । और महीने भर से टरकाते आते हैं । मगर आज—(यकायक ब्राह्मण के रूप में बदल कर) अपना दान ले कर छोड़ूँगा ।"

(एक तरफ़ चल देता है ।)

दृश्य ६४

सेठ करोड़ीमल अपनी बही देख रहे हैं

सेठानी जी—(आकर) "अजी सेठ जी आज एतवार है न? आज वह ब्राह्मण अपना दान लेने आता ही होगा।"

करोड़ीमल—"हाँ हाँ। मैं तो भूल ही गया था। ख़ूब याद दिलायो।"

सेठानी—"जब मुँह से दान कर चुके तब दे डालो। नाहक उसे महीने भर से दौड़ा रहे हो। कौन बहुत है। केवल दो ही पैसे तो हैं।"

करोड़ीमल—"अरी जा। म्हारो दिवालो निकालने वाली है क्या? इस तरह बाप रे बाप! दो पैसों का दान देने लगूँ तो मैं भला सेठ करोड़ीमल रह सकता हूँ?"

'सेठानी—तब आज कौन सा बहाना करोगे?'

(बाहर से आवाज़ आती है—'अजी सेठ करोड़ीमल जी')

करोड़ीमल—'लो वह आ गया। जल्दी से रोनो पीटनो शुरू कर दे। कह देना सेठ जी मर गए। 'हार्ट फ़ेल' हो गया। मैं दम साधे पड़ा जाता हूँ। उससे किसी तरह पिण्ड तो छूटे।'

(बाहर से फिर वही आवाज़ आती है। सेठानी जी रोती हुई द्वार खोलने जाती हैं।)

विलक्षण-पुरुष—(ब्राह्मण के रूप में रोती हुई सेठानी के पास आकर)—"हाय! हाय! यह तो बड़ा अनर्थ हुआ सेठा नी

अच्छा शान्त होइए। मत रोइए। अब मुर्दे का इस प्रकार घर में पड़ा रखना अच्छा नहीं है। उसके अन्तिम संस्कार का अब शीघ्र प्रबन्ध करना चाहिए।"

सेठानी—(रोती हुई)—"हाय ! मैं तो लुट गई। क्या करूँ ! कुछ समझ में नहीं आता।"

विलक्षण-पुरुष—(ब्राह्मण के रूप में)—'आप तनिक भी चिन्ता न कीजिए।'

दृश्य ६५

स्मशान

विलक्षण-पुरुष—ब्राह्मण के रूप में—(करोड़ीमल को मुर्दे की तरह चिता पर लिटा कर चिता जलाने की तय्यारी करते हुए) 'राम नाम सत्य है ! राम नाम सत्य है !......अजी सेठ जी। ओ सेठजी धन्य हैं आप ! धन्य है आपकी कञ्जूसी ! आपने मुझे पूर्ण रूप से जीत लिया। अब आँख खोलिए। क्योंकि मैं ब्राह्मण नहीं, बल्कि (एकाएक विष्णु भगवान के रूप में बदल कर) विष्णु हूँ। कञ्जूसी की परीक्षा लेने संसार में आया था और उसमें आप अव्वल निकले।'

सेठ जी—(चिता के भीतर से) सचमुच आप ब्राह्मण नहीं विष्णु भगवान हैं।?'

विलक्षण-पुरुष—(विष्णु के रूप में) हाँ, हाँ और आपने अपनी कञ्जूसी के व्रत से मुझे जीत लिया है। अब जो माँगना

हों माँग लीजिए।'

सेठ जी—(चिता से निकल कर विष्णु के पैरों पर गिरते हुए) 'तब तो महाराज मैं यही वर माँगता हूँ कि आपको जो दो पैसों का दान देने का मैंने वचन दिया था उसको आप कृपा करके क्षमा कर दें।'

दृश्य ६६

इजलास

(फिर दृश्य ४४ आठवीं वार)

क़ानूनीमल—'ऐसे ऐसे कञ्जूसों से जिनके यहाँ दौलत पड़ी सड़ती और अपने कर्मों को रोती है और जिनसे रुपये निकालने में ख़ुद विष्णु भगवान तक हार जाते हैं। उनसे इस वेश्या ने—'

दृश्य ६७

एक सजा हुआ कमरा

(सेठों की महफ़िल में मनमोहिनी वेश्या का नाच हो रहा है और सेठ हज़ारीमल, रोकड़मल, लखीसाह और करोड़ीमल देख-देख कर मस्त हो रहे हैं)

दृश्य ६८

चित्रगुप्त का ध्यान-स्थान

(फिर दृश्य ५३ दूसरी बार)

चित्रगुप्त—(ध्यान करते हुए)—"हे परमात्मा मैं अपनी त्रिलोकदर्शी ऐनक का पता नहीं पाता। अब तुम्हीं दया करो।

जहाँ कहीं हो उसे शीघ्र भिजवाओ। उसके बिना तीनों लोक का हाल नहीं जान सकता। कैसे धर्मराज जी के पास जाऊँ। सारा काम बन्द है। अब देर न करो नाथ—

दृश्य ६९

एक सजा हुआ कमरा

फिर दृश्य ६७ दूसरी बार

(मनमोहनी वेश्या नाचते-नाचते गाने लगती है और सेठ हज़ारीमल रोकड़मल, लखीसाह और करोड़ीमल इतने मस्त हो जाते हैं कि वे भी इस नाच में शामिल होकर नाचते और गाते हुए इस वेश्या पर रुपयों की बौछार करने लगते हैं)

गाना

मनमोहनी—"छूम छूम छ न न ना।
छूम छूम छ न न ना।
छमक छमक छूम छन न न ना।

हज़ारी
रोकड़ } —"आहा हा हा हा !

लखी
करोड़ी } —वाह ! वाह ! क्या कहना !

चारों सेठ मिल कर—

"दिल फटक फटक भयो स न न न ना।"
सन सन सन न ना, सन सन सन न ना।

मनमोहनी—जा जा रे साँवलिया मैं न बोलूँगी।

ना बोलूँगी मैं ना बोलूँगी।
झूठी बतियाँ तोरी सारी मैं न मानूँगी।
॥ जा जा० ॥

हज़ारी—"ग़ज़ब न ढाओ,
रोकड़—आओ आओ।
लखीसाह—मत मुख मोड़ो।
करोड़ी—मुझसे बोलो।
मनमोहनी—न न न न ना।
चारो सेठ—लहँगो दुपट्टो गहनों लेलो, लेलो रूपइयो ठ न न न ना।

ठन ठन ठन न ना, ठन ठन ठन न ना।
ठन ठन ठनक ठनक ठन ठन न न ना॥

दृश्य ७०

इजलास

(फिर दृश्य ४४ नवीं बार)

क़ानूनीमल—"उन्हीं कञ्जूसों से इस वेश्या ने देखिए किस तरह रुपये निकाल कर संसार में चालू कर दिया और इस तरह अपने साथ दुनियाँ का कितना भला किया। इससे भी बढ़ कर और कोई स्वर्ग का हक़दार हो सकता है और उसको आप पापिनी समझ बैठे ?

दृश्य ७१

एक विचित्र स्थान

कलयुग—(खुशी से ताली पीटते हुए) हिप ! हिप ! हुर्रे ! वाह मेरे गुरु घण्टाल वाह ! धर्मराज जी बोल गए अब उनकी कुर्सी मुझे मिलने ही—"(यकायक उसकी आँखों से ऐनक निकल कर हवा में एक तरफ़ उड़ जाती है) अरे ! यह क्या ? (ऐनक को पकड़ने के लिए गिरते-पड़ते पीछा करता है)

दृश्य ७२

चित्रगुप्त का ध्यान-स्थान

(फिर दृश्य ५३ तीसरी बार)

(ऐनक उड़ती हुई जाकर चित्रगुप्त जी की आँखों में लग जाती है और उसके पकड़ने की कोशिश में कलयुगी नाथ दौड़ते हुए आकर गिर पड़ते हैं)

चित्रगुप्त—"ओ हो हो ! मेरी ऐनक अपने चोर को भी साथ लेती आई । कौन बाबू कलयुगी नाथ ? आप ! हा हा हा ! क्यों न हो !

दृश्य ७३

इजलास

(फिर दृश्य ४४ दसवीं बार)

धर्मराज—"बस गुरूघण्टाल जी ! बस ! आप को परमात्मा के पास अपनी रिपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । मुझे स्वयं पेनशन लेना स्वीकार है—"

(चित्रगुप्त जी एकाएक टपक पड़ते हैं)

चित्रगुप्त—"यह क्या महाराज ?"

धर्मराज—(क़ानूनीमल के दिए हुए क़ाग़ज़ की ओर इशारा करते हुए जो उड़ कर आप से आप चित्रगुप्त जी के हाथ में पहुँच जाता है।) —"क्या बताऊँ चित्रगुप्त जी इन गुरुघण्टाल महाशय ने मुझे विश्वास दिला दिया कि कलयुग में मैं अपना कर्त्तव्य ठीक पालन नहीं कर सकता। इस लिए मैंने इस झंझट से छुट्टी पाने के लिए पेनशन लेना स्वीकार कर लिया।

चित्रगुप्त—(काग़ज़ देख कर) इससे क्या ? मैंने नहीं स्वीकार किया। वह स्वीकृति कोई चीज़ नहीं है ?

क़ानूनीमल—"माफ़ कीजिए चित्रगुप्त जी। इस मामले में अब आप कुछ बोल नहीं सकते। ऐक्ट लगान के क़ानून के बमोजिब जहाँ असल काश्तकार बेदख़ल हुआ उसके साथ शिकमी भी बेदखल हो जाता है।

चित्रगुप्त—"आप भूलते हैं। मैं शिकमी नहीं शरीक़-काश्त-कार हूँ। जिसके लिए उसी में यह क़ानून है कि एक का इस्तीफ़ा कुछ काम नहीं करता।"

क़ानूनीमल—"ओ हो ! आप भी वकालत पास हैं। पहिले यह तो बताइये कि आप शिकमी नहीं शरीक-काश्तकार किस तरह हैं।"

चित्रगुप्त—"सुनिए। यह धर्मराज जी विवेक हैं तो मैं बुद्धि हूँ। यह परिमाण तो मैं अङ्क। यह मानी तो मैं शब्द। सारांश

यह कि यह विचार हैं तो मैं उसको प्रगट करने वाला चिन्ह हूँ। मेरे चिन्ह यानी अङ्क जिसका चित्र पढ़ते ही आँखों के सामने झलक उठता है वह क्या है ? ज्ञान का कोई न कोई रूप। उसी ज्ञान के अवतार हमारे धर्मराज जी हैं। और उन्हीं के चित्र को गुप्त रखने वाली कला का नाम चित्रगुप्त यानी लेखन हैं। यह ज्ञान और मैं कला। हमारा इनका तो चोली दामन का साथ है। असल और शिकमी का सवाल कैसा ?

दृश्य ७४

एक अँधेरी गुफ़ा

यमदूत सरदार नम्बर १—(ज़मीन पर निर्जीव की तरह पड़े हुये करवट लेकर)—"अँय ! मुझ में कुछ कुछ चैतन्यता का सञ्चार ? क्या मेरी गई हुइ शक्ति वापस आ रही है।"

दृश्य ७५

फिर दृश्य ४४ नवीं बार (इजलास)

चित्रगुप्त—"हाँ अब बताइये आप हम लोगों पर क्या दोष लगाते हैं।

क़ानूनीमल—"सरासर ग़ैरइन्साफ़ी का। बस कमज़ोरों को सताना आप लोग जानते भी हैं। जबरदस्तों को नहीं।"

चित्रगुप्त—"किस तरह ?"

क़ानूनीमल—"एक अदना मिसाल यही देखिए कि चिक-मण्डी में शेर चीता भालू वग़ैरह नहीं हलाल किए जाते और

हलाल करने के लिए आपने तजवीज भी किया तो किसको ? भेड़ बकरी को जो बेचारी अपनी साये से डरती हैं। किसी का ख़ून नहीं चूसती ख़ाली घास से अपना पेट भरती हैं। यही ईश्वर के यहाँ का इन्साफ़ है और उसके कर्ता धर्ता आप लोग ?

चित्रगुप्त—"गुरू घण्टाल जी ! संसार में सभी को एक न एक दिन मरना हैं इससे कोई प्राणी बच नहीं सकता। भेड़ बकरियों की मृत्यु इसी तरह रखी गई है। रोग या बुढ़ापे की तकलीफ़ें झेल कर नहीं।

क़ानूनीमल—"मगर बिना क़सूर इस तरह मारा जाना क्या उनपर ज़ुल्म नहीं है !

चित्रगुप्त—"ज़ुल्म ? आहाहाहा ! जिन्हें क़सूर समझने की शक्ति ही नहीं है। उनके लिए क़सूर का ढोंग कैसा ? यह तो मनुष्यों के लिए है, जिन्हें सोच, समझ और बुद्धि दी गई है मृत्यु के कुछ न कुछ बहाने रक्खे जाते हैं। उसी के साथ संसार को यह भी तो दिखाना है कि यह संसार भेड़ बकरियों के लिए नहीं बना है, यहाँ जिसे रहना है, शक्तिशाली बने। भेड़ बकरी बन कर नहीं रह सकता।

दृश्य ७६

अँधेरी गुफ़ा

फिर दृश्य ७४ दूसरी बार

यमदूत सरदार नम्बर १—(खड़े होकर) "अरे अब तो इतनी शक्ति आगई कि मैं चलने फिरने योग्य भी हो गया। क्या

गुरुघण्टाल को यहाँ कोई गुरु मिल गया ! ज़रा चल कर देखूँ तो सही ।

दृश्य ७७

इजलास

फिर दृश्य ४४ बारहवीं बार

क़ानूनीमल—"मगर मगर—हाँ आख़िर हिन्दुस्तानियों को क्यों आप लोगों ने भेड़ बकरी से भी बदतर समझ रखा है उनको भी तो परमात्मा ने वैसे ही हाथ पैर आँख कान दिल और दिमाग़ दिए हैं, जैसे उन कौमों को जिन पर आपकी मेहरबानी की नज़र है क्या यह तरफ़दारी नहीं है ?"

चित्रगुप्त—"जो आप अपनी दुर्दशा करे उसके लिए आप और किसी को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं। नहीं समझे तो आइए मृत आत्माओं के पड़ाव के रास्ते पर........."

दृश्य ७८

मैदान

यमदूत सरदार नम्बर १—(एक पेड़ के पास आकर)—'अरे!' चित्रगुप्त जी और धर्मराज जी तो गुरू घण्टाल को इधर ही लिए आ रहे हैं। मामला क्या है ? छिपकर देखना चाहिए।" (पेड़ पर चढ़ जाता है।)

चित्रगुप्त—(धर्मराज जी और क़ानूनीमल के साथ आकर)—बस ठहर जाइए। भारतवर्ष की मृत-आत्माएँ एक क़तार में

बँधी हुई, परन्तु चैतन्य-शून्य नर्क लोक को जा रही हैं। (दूर पर बहुत से लोग पृथक-पृथक हिन्दुस्तानी पोशाकों में जिनकी कमर एक दूसरे के पीछे रेल की गाड़ियों की तरह आपस में बँधी हुई हैं आँखें बन्द किए हुए एक तरफ़ जाते हुए दिखाई पड़ते हैं।) अब आँखें खोल कर देखिए अपने हिन्दुस्तान को—(मृत-आत्माओं की क़तार नज़दीक आकर प्रत्येक व्यक्ति सिलसिलेवार निम्न सम्वाद के अनुसार दिखाई पड़ता है।) "नम्बर १ झुटइया, नम्बर २ तुर्की टोपी, नम्बर ३ गाँधी टोपी, नम्बर ४ दुपल्ली टोपी, नम्बर ५ फ़ेल्ट कैप, नम्बर ६ मारवाड़ी पगड़ी, नम्बर ७ पारसी टोपी, नम्बर ८ हैट, नम्बर ९ ईरानी टोपी, नम्बर १० कनटोप, नम्बर ११ कामदार चौगोशिया टोपी, नम्बर १२ साफ़ा। बारह खोपड़ी और उसके बारह प्रकार के आडम्बर? आपस में इतना भेद?"

क़ानूनीमल—"वाह! ख़ूब समझे। यह भेद नहीं फ़ैशन है। जहाँ के लोग जानवर और हैवान नहीं, बल्कि खालिस इन्सान हैं वही यह शौकीनी दिखाई पड़ती है।"

कलियुग—(उसी पेड़ की एक शाख़ पर बैठे हुए जिस पर यम-दूत सरदार नम्बर १ चढ़ा है।) "अहाहाहा! क्या वार रोका है। शाबाश मेरे गुरूघण्टाल शाबाश।

यमदूत सरदार नम्बर १—(दूसरी शाख़ पर बैठे हुए कलयुगी नाथ की ओर मुँह बिचका कर) "शाबाश! शाबाश!"

चित्रगुप्त—"यह शौक़ीनी है?"

क़ानूनीमल—"तब क्या है आपही बताइए।"

चित्रगुप्त—"अहङ्कार के निशान। इनमें से हर एक आपस में यह कह रहा है कि जो मैं हूँ वह तुम नहीं हो। यानी मैं उत्तम और तुम घृणा के योग्य हो। किसी को अपने धर्म का घमण्ड है तो किसी को अपनी जाति का। कोई अपने अधिकार के पीछे अँधा है तो कोई अपने धन के। जहाँ अहङ्कार का ऐसा साम्राज्य है वहाँ के लोग भला मनुष्य रह सकते हैं?"

यमदूत सरदार नम्बर १ (शाखा पर)—"वाह वाह! बहुत ठीक। वाह जी मेरे चित्रगुप्त महाराज।"

क़ानूनीमल—"मगर इस ज़बानी जमाख़र्च का सबूत क्या है?"

चित्रगप्त—"वह भी लीजिए (मृत-आत्माओं की ओर) नम्बर १ और २ अपनी श्रेणी से अलग होकर आगे बढ़ और आँखें खोल।"

मृतआत्मा नम्बर १—(नम्बर २ के साथ अपनी क़तार से अलग होकर और आँखें खोल कर। मगर दोनों की कमर एक दूसरे से बँधी हुई है)। "हे परमात्मा दया करो नाथ"

मृतआत्मा नम्बर २—"या इलाही रहम कर—"

नम्बर १—"राम! राम! यह क्या? यहाँ इलाही कह कर किसने मेरी प्रार्थना भ्रष्ट कर दी?"

नम्बर २—"तौबा! तौबा! परमात्मा कह कर किसी मरदूद ने मेरी इबादत ख़राब कर दी? क्यों बे तू है काफ़िर? तेरी इतनी मजाल?"

नम्बर १—"साथ में म्लेच्छ ! अत्तेरे की ! तब क्यों न मुझे नरकधाम हो । हाय ! हाय ! सब भ्रष्ट हुआ । दूर दूर भाग यहाँ से ।"

नम्बर २—"अबे तू दूर हो । नाहञ्जार ! दोज़खी !"

[दोनों में मारपीट। मगर कमर बँधी होने से कोई अलग नहीं हो पाता]

चित्रगुप्त—"यह दोनों एक ही परमात्मा के बनाये हुए एक ही खेत के पौधे होने पर भी उसी परमात्मा के नाम पर देखिए आपस में कैसे कट मर रहे हैं। उनका नाम तक इनको एक साथ लेना गवारा नहीं है। इस लड़ाई में दोनों की कमर को रस्सी टूट गई। फिर भी दाढ़ी और भुटइया आपस में उलझकर दोनों रसातल की ओर लिए जा रही हैं।

क़ानूनीमल—"आपने इसकी कोई रिपोर्ट परमात्मा के पास भेजी कि उन्होंने अपने कई नाम क्यों रखे जिससे दुनिया में आफ़त मची हुई है। अगर किसी ने बटवारा करा दिया तो बेचारे साँसत में पड़ जाँयेंगे कि नहीं ?"

कलयुग—(शाख पर)—"ओहोहो ! क्या पैतरा बदल कर वार किया है । वाह ! वाह !"

चित्रगुप्त—"समझ गया । आपकी क़ानूनी समझ के लिए अभी और सबूत दरकार है । (मृत-आत्माओं की तरफ़) सब होश में आजाओ ।"

मृतआत्मा—नम्बर-५-"क्यों भाई यह गाड़ी इस स्टेशन पर बहुत रुकी ।"

नम्बर १०—"यहाँ शायद और मुर्दे जोड़े जायेंगे।"

नम्बर ९—"मगर यह जा कहाँ रही है।"

नम्बर ८—सिवाय जहन्नुम के और कहाँ जायगी ?"

नम्बर ६—"अजी जहन्नुम तुम ऐसों के लिए होगा। मैंने तो मरने के पहिले ही अपने क्रिया कर्म कर डाले। और दान में समूचे हाथी भी दे दियो। ताकि यहाँ उसी पर चढ़ कर खूब ठाठ से बैकुण्ठ को जाएँ।

नम्बर साथ ७—"तो मालूम होता है कि आप तो मर गए। मगर हाथी अभी नहीं मरा इसी से वह अब तक यहाँ नहीं पहुँचा।"

नम्बर ११—"अरे भाई मैंने भी अपने पण्डे को जो दुनिया में बैकुण्ठ का ठेकेदार है पूरे पाँच सौ रुपये देकर बैकुण्ठ में अपने लिये एककमरा रिजर्व *(Reserv)* करा लिया है। इसलिये भाई अपने हाथी पर मुझे भी ले चलना। इसके बदले में मैं भी थोड़ी सी जगह अपने कमरे में तुम्हें दे दूँगा।"

नम्बर ३—"अगर भाई आप लोग रुपयों के बल पर बैकुण्ठ जा सकते हैं तो मैं तो ब्राह्मण हूँ। खास ईश्वर की जाति का। वह अपनी जात वालों को बै कुण्ठ न देंगे तब किसे देंगे ?"

नम्बर १२—"झूठ ! झूठ ! बिलकुल झूठ! ईश्वर ब्राह्मण नहीं क्षत्री हैं। मेरी जाति के। देख ले रामावतार में ईश्वर ने क्षत्री के घर जन्म लिया था इसी बात पर मारो इस मूर्ख के मुँह पर कस के तमाचा।"—(नम्बर ११ के मुँह पर तमाचा मारता है।)

नम्बर ११—"अरे! तूने मुझे क्यों मारा है ?"

नम्बर १२—"पास तू खड़ा है तब मारता किसे ? तू अपने आगे वाले को मार और वह अपने आगे वाले को। इस तरह मेरा तमाचा वहाँ तक पहुँचा दो।"

[तमाचों की मार सिलसिलेवार अन्त तक]

नम्बर ३—(तमाचा खाकर)—"अच्छा रह। क्या बावन अवतार भूल गया ? जब ईश्वर अपने असली ब्राह्मण के रूप में प्रगट हुए थे। अब मारो इसके मुँह पर थप्पड़ इस तरह।"

[तमाचों की मार सिलसिलेवार दूसरे अन्त तक]

दृश्य ७९

इजलास (दृश्य ४४ तेरहवीं बार)

चित्रगुप्त—"देखा इस अहङ्कार ने इन लोगों को मनुष्य से कैसा पशु बना रक्खा है। जहाँ इतना भेद-भाव होगा वहाँ की दशा क्या होगी ? बताइए गुरुघण्टाल जी। अब चुप क्यों हैं ?"

दृश्य ८०

रोशनदान का बाहरी हिस्सा

[यमदूत सरदार नम्बर १ और कलयुगीनाथ भीतर झाँकने के लिए एक दूसरे को धक्का दे रहे हैं]

यमदूत सरदार न० १—"(झाँकता हुआ) "ओ हो अब बोलें क्या ? अब तो छठी का दूध याद आ रहा ?" (कलयुगीनाथ बिगड़ता है)

दृश्य ७६

इजलास—दृश्य ४४ चौदहवीं बार

क़ानूनीमल—"एक नया क़ानून याद आ गया ?"

चित्रगुप्त—"क्या ?"

क़ानूनीमल—"यही कि बाप के इजलास पर लड़के का वकालत करना मना है। और आप मेरे बाबा के भी बाबा हैं क्योंकि मैं कायस्थ हूँ, आप ही के वंश का। इस क़ानून के याद आ जाने से अब मैं आप के सामने कैसे बहस कर सकता हूँ ? इस मामले को कहीं और मुन्तकिल कर दीजिए।"

चित्रगुप्त—"ओ हो ! आख़िर आप भी आ गए उसी रङ्ग पर और लगे जातीयता की गोहार लगाने।

यमदूत सरदार नम्बर १—(रोशनदार पर से कूदता हुआ) "जय चित्रगुप्त महाराज की जय। क़ानूनीमल की गर्दन पर पहुँच कर) हत्त तेरी की ! जब मुँह की खाई, तब बाबा याद पड़े। अब जनाब आप की सारी गुलघपटाली किरकिरी हो गई। बस अब चलिए सीधे नर्क को।"

क़ानूनीमल—"अरे यह क्या ? हाँ मैंने तो मुनतकली की दरख्वास्त दे दी है अब यह कैसा अन्धेर ? यह कुल कार्रवाई की कार्रवाई ग़लत है। धत्तेरे की ! यहाँ ऐसी धाँधली है तो

मेरी दुनियाँ मुझे मुबारक। जो कुछ करना हो वहीं कर लीजिएगा। देख लूँगा।"

चित्रगुप्त–'जादू वह जो सर पर चढ़ के बोले। (यमदूत सरदार नम्बर १ से) इन्हें जहाँ से लाए हो वहीं पहुँचा दो।"

(क़ानूनीमल और यमदूत सरदार नम्बर १ दृश्य से अलोप हो जाते हैं)

धर्मराज–"यह क्या चित्रगुप्त महाराज ?"

चित्रगुप्त--'यह सब पहिले ही से लिखी-पढ़ी बात थी धर्मावतार। इसी के नहीं बल्कि (दृश्य में एक-एक करके ऊर्ध्वबाहू, मनमोहनी, ढबढब पाण्डे और भगुआ दिखाई पड़ता है) इन लोगों के भी अभी दिन पूरे नहीं हुए हैं। इन सबों को अपने-अपने कर्मों का फल संसार ही में भोगना है। ईश्वर भक्ति पर जो इन दिनों कुछ गर्द पड़ गई है उसको और संसार के गर्व और भेदभाव को दूर करने के लिए ये लोग यहाँ कुछ घण्टों के लिए बुला लिए गए थे। इसीलिए इनकी लाशें अभी तक नष्ट नहीं होने पाई हैं। ऊर्ध्वबाहू, मनमोहनी, ढबढब पाण्डे और भगुआ दृश्य से अलोप हो जाते हैं।) अच्छा अब देवलोक में सब से उच्च स्थान देने के लिए चल कर महात्मा गाँधी का स्वागत करें जिन्होंने अपनी अपूर्व सेवा और त्याग से भारत के भाग्य को चमकाया है और अहिंसा, एकता और सचाई का प्रचार करके संसार से विरोधभाव को मिटाया है। उनके ऐसी

और कोई दूसरी आत्मा आज तक न हुई है और न होगी, जिसकी मृत्यु पर समस्त संसार ने शोक मनाया हो।"

दृश्य ८१

स्वर्ग का सब से सुन्दर स्थान (दृश्य ५२ दूसरी बार)

(देवताओं के बीच में महात्मा गाँधी विराजमान हैं और स्वयं कृष्ण भगवान उन्हें हार पहना रहे हैं)

देवतागण—"बोलो भारत के उद्धार कराने वाले, संसार में मनुष्यता और प्रेमभाव के प्रचार कराने वाले, ईश्वर भक्ति की सची राह बताने वाले महात्मा गाँधी की जय।"

[हर तरफ़ "महात्मा गाँधी की जय" का शोर। अपसराएं यकायक दृश्य में आरती लिये प्रगट होती हैं और गाती हैं]

गाना

जन गन मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता,
पञ्जाब सिन्धु गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंगा,
विन्ध हिमाचल यमना गंगा, उच्चल जल वितरंगा,
तव शुभ नामें जागे, तव शुभ आशिस माँगे,
गाए तव जय गाथा।
जन गन मंगल दायक, जय हे भारत भाग्य विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे भारत भाग्य भाग्य विधाता, पूरब
पश्चिम आए, तव सिंहासन पासे, करे चरने नत माथा ॥
(टैगोर)

दृश्य ८२

स्मशान (दृश्य ६५ दूसरी बार)

[दरिया के ऊँचे किनारे पर क़ानूनीमल की चिता बनाई जा रही है। लोग रामनाम सत्य कहते हुए उनकी लाश चिता पर रख कर उसके ऊपर लकड़ियों का ढेर लगा रहे हैं]

दृश्य ८३

अस्पताल का बरामदा

[दो कम्पाउण्डर भगुआ की लाश को मेज़ पर लिटाए उसमें साँस लाने की गरज़ से उसके दोनों हाथों को पकड़ कर ऊपर नीचे लाने की कार्रवाई कर रहे हैं और बीच में डॉक्टर सिन्हा खड़े देख रहे हैं]

एक कम्पाउण्डर—"अब तो डॉक्टर साहब कोई उम्मीद नहीं जान पड़ती। देर की डूबी हुई लाश है।"

डॉक्टर—"नहीं रंग अच्छा है कोशिश किए जाओ।"

दृश्य ८४

दरिया का किनारा

[कुछ मछली मारने वाले दरिया में फेंका हुआ जाल खींच रहे हैं।]

१—"इस दफ़े तो बड़ी भारी मछली फँसी है।"

२—"अरे ! यह तो आदमी की लाश है।"

१—२—३—" हाँ सचमुच।"

१—"मगर अभी बिलकुल ताज़ी है। उल्टा टाँग कर पेट से पानी निकाल दो शायद जी जाए।

[सब लोग मिल कर ढवढव पाण्डे को किनारे पर लिटा कर उसके हाथ पैर मलते हैं और उसका पेट दबाते हैं। वैसे ही उसके आँख-मुँह-नाक-कान से पानी के फ़व्वारे छूटते हैं जो सबके मुँह पर पड़ते हैं।]

२—हात तेरे की। ऐसे नहीं। लग्गे से पेट दबाओ।"

दृश्य ८५

आकाश (दृश्य छठवाँ दूसरी बार)

[ऊर्ध्ववाहू, मनमोहनी वेश्या, क़ानूनीमल, ढवढव पाण्डे और भगुआ की आत्माएँ आकाश से पृथ्वी की ओर जा रही हैं]

दृश्य ८६

श्मशान (दरिया की तरफ़ से)

[दरिया के ऊँचे किनारे पर चिता जल रही है। जिसका दरमियानी हिस्सा पानी के थपेड़ों से बहुत कुछ कट गया है।

चिता के नीचे की ज़मीन कुछ गिर पड़ती है। उसके साथ लाश भी नीचे लुढ़क पड़ती है। परन्तु ऊपर चिता का ऊपरी हिस्सा ज्यों का त्यों जल रहा है। क़ानूनीमल की आत्मा आस्मान की तरफ़ से आकर लाश तक पहुँच कर अलोप हो जाती है। वैसे ही कफ़न फाड़ कर क़ानूनीमल उठ बैठते हैं। और आँखें फाड़ कर चारों तरफ़ देखते हैं। वह सोचते हैं, उनके दिमाग़ में एक तूफ़ान उठता हुआ नज़र आता है।]

दृश्य ८६ (२)

स्मशान किनारे की तरफ़ से (दृश्य ६५ तीसरी बार)

[क़ानूनीमल के सम्बन्धी सब जमा हैं। और दरिया की तरफ़ सामने चिता जल रही है।]

१—"लो बेचारे क़ानूनीमल की आख़िरी निशानी भी जल कर ख़ाक हो गई।"

२—"हाँ भाई यही दुनिया है। आख़िर सब की गति यही होने वाली है।"

३—"फिर भी तो दुनियाँ की आँखें नहीं खुलतीं।"

(क़ानूनीमल कफ़न बाँधे दरिया की तरफ़ से किनारे पर चढ़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। सब लोग परेशान हो जाते हैं।"

४—"अरे! वह देखो क़ानूनीमल!"

१—"नहीं जी। यह कैसे हो सकता है? क़ानूनीमल की हड्डियाँ तक जल कर राख हो गईं। अरे! हाँ सचमुच। अरे

बाप रे बाप ! तब तो यह भ'''भ'''भूत'''"

[सब चिल्ला कर भागते हैं]

क़ानूनीमल--यह क्या ? यह लोग मुझे देख कर भागे क्यों ? अरे भाई सुनना।"

[क़ानूनीमल का पीछा करना और लोगों का और घबड़ा कर भागना]

दृश्य ८७

क़ानूनीमल का मकान (दृश्य १४ दूसरी वार)

[क़ानूनीमल के घर के लोग और पुरोहित जी]

पुरोहित—"अब कोई खटका नहीं मैंने वेद मन्त्रों से मकान को ऐसा सुरक्षित कर दिया है कि यहाँ प्रेत आत्मा का प्रवेश हो ही नहीं सकता।

(यकायक क़ानूनीमल को आते हुए देख कर चिल्ला कर भागता है और उसी के साथ सब के सब भाग खड़े होते हैं।

क़ानूनीमल—"उफ़ ! अपने घर वाले भी''''''यकायक दुनिया ऐसी बदल गई ?"

दृश्य ८८

(पहाड़ की खड्ड)

[ऊर्ध्वबाहू एक पेड़ में मृतवत अटके हैं। उनकी आत्मा आकाश से आकर उनके शरीर में प्रवेश करती है। वैसे ही वे आँखें खोलते हैं।)

ऊर्ध्ववाहू—"अयं ! मैं यहाँ कैसे ?" (सोचता है)

[ऊर्ध्ववाहू के दिमाग़ के भीतर ऊपर पहाड़ी रास्ते पर चलते हुए पैर फ़िसल जाने के कारण उसके गिरने का दृश्य दिखाई पड़ता है]

ऊर्ध्ववाहू—"यदि मेरी एक बाँह सूखी न होती तो कदापि नहीं गिर सकता था। अवश्य ही सम्हल जाता। परन्तु आह ! यह क्या ? (पीड़ा अनुभव करता हुआ) मेरा दूसरा हाथ और पैर भी बेकाम हो गया। आह ! तब मैं यहाँ से किस तरह ...भगवान भगवान..."

दृश्य ८६

(चौराहा)

कई अख़बार बेचने वाले—"सबसे ताज़ी ख़बर, सात लाख रुपये की लॉटरी का नतीजा !"

लोग अख़बार ख़रीद कर उसे बड़ी उत्सुकता से देखते हैं। उनमें से एक "धत्त रे की ! क़िस्मत भी बस अब अछूतों ही का साथ देने लगी। सात लाख की लॉटरी मिली भी तो किसको मुझको नहीं। एक भंगी को, जिसकी तनख़्वाह ज़बरदस्ती मैंने लॉटरी में भिजवा दी थी।"

लोग—"अजी किस भँगी को। ज़रा बताना—"

[क़ानूनीमल का परेशान आना और सबका चिल्ला कर गिरते-पड़ते भागना]

क़ानूनीमल—'जिस दुनिया पर मुझे इतना घमण्ड था वही अब इस तरह मुझसे भागने लगी । हाय !

दृश्य ९०

(सड़क) दृश्य ४ दूसरी बार

[भगुआ सड़क बहार रहा है और हर तरफ़ से लोग अखबार लिए 'मुबारक हो, मुबारक हो' की हाँक लगाते हुए उसे घेर लेते हैं]

भगुआ—'का होय भाई हमका अस घेरत काहे हो ? कौन कसूर कीन है ?"

लोग—"अरे ! अब सड़क क्यों बहारता है ! मौज कर मौज । सात लाख रुपये की लॉटरी तेरे नाम निकली है ।"

ढबढब पाण्डे रास्ता चलते-चलते—"अँय । यहाँ लोग क्यों जमा हैं ?"

भगुआ—"सच्चे ? तब हमार सड़किया के बहारी ? बोलो भाई ! सरकारी नौकरी पर से बिना चारज दिए कसस चला भाई ?"

[ढबढब पाण्डे भीड़ चीर कर घुस आते हैं]

भगुवा—"हमार चारज लेवे आए हो ? लो भाई लो । (झाड़ू ढबढब पाण्डे पर ढकेल देता है) भले दया कियो । हम छुट्टी पाय गएन । ओ हो हो ! सात लाख ! सात लाख !! (पागलों की तरह नाचता हुआ जाता है) ।

ढबढब पाण्डे (झाड़ फूँक कर)—"यह क्या ? फिर भ्रष्ट हो गये ? धत्तेरे अछूतों का सत्यानाश हो।"

दृश्य ६१

(मनमोहनी वेश्या का मकान)

[मकान का एक हिस्सा गिरा हुआ है। बहुत से मजदूर उसके मलबे हटाने में लगे हैं। यकायक कुछ मजदूर चिल्ला पड़ते हैं]

२—"क्या बाई जी की लाश ?"

३—"हाँ हाँ मगर वाह रे भगवान ! हजारों मन ईंट पत्थर के नीचे अपने पलंग पर बाई जी देखो ज्यों की त्यों कैसी लेटी हैं।"

४—"हाँ जी। लोहे के दोनों गरडर ऐसे तिरछे गिरे हैं कि सारा बोझ उन्हीं पर अटक कर रह गया। और पलङ्ग दबने से बाल-बाल बच गया।"

२—"तो इससे क्या ? पलङ्ग दब जाता तो तुरन्त मर जातीं। नहीं तो इन सात दिनों में घुट-घुट कर मरी होंगी।"

१—'नहीं जी। साँस चल रही है। यह ईश्वर की महिमा देखो।'

[लोग जल्दी-जल्दी मनमोहनी के मुँह पर छींटा देते हैं, पखा झलते हैं। वह इस तरह उठती है मानों सो कर जागी है। वैसे ही उधर क़ानूनीमल परेशान निकलते हैं। सब चिल्ला कर भागते हैं। सिर्फ मनमोहनी भौचक बैठी रह जाती है।]

क़ानूनीमल—"अरी दुनिया! ज़रा ठहर, ज़रा ठहर, इस तरह न भाग। (पलङ्ग पर मनमोहनी को देख कर) मत भागो। मत भागो। मैं आदमी हूँ दुनियाँ से अलग नहीं रह सकता। तुम्हीं मेरी दुनिया बन जाओ......"

मनमोहनी—(पागलों की तरह आँखें फाड़ कर देखती हुई) आँय ?...दुनिया...दुनिया अ हा हा हा !..दुनिया...

क़ानूनीमल—'अरे! यह मिली भी तो पागल! हाय! मेरा कहीं ठिकाना नहीं। हाय!

दृश्य ९२

भग्गू का ड्राँइङ्ग रूम

[भगुआ अब भग्गू चौधरी के रूप में एक मौलवी साहब से पढ़ना सीख रहा है]

मौलवी—"आप की समझ बड़ी अच्छी है। आप बड़ी जल्दी लिखना-पढ़ना सीख जाएँगे। देखिये दो ही दिन की मेहनत में आप कितनी अच्छी तरह शहर की ज़बान बोलने लगे।"

भग्गू—"यह आप की मेहरबानी की बदौलत..."

दृश्य ९३

पहाड़ी दरिया का किनारा

[जंगली लोग, मर्द-औरत नाच-गाकर ख़ुशियाली मना रहे हैं। दूर से क़ानूनीमल को देखते ही सब इस तरह

[घबड़ा कर भागते हैं कि कोई किसी के ऊपर गिरता है कोई दरिया में और कोई कहीं]

क़ानूनीमल--(मैदान बिलकुल ख़ाली पाकर)--"ईश्वर! ईश्वर! बचाओ। दुनिया मुझे काटे खा रही है। वही दुनिया जिसको मैं अपनी जानता था जिस पर मैं तन-मन-धन न्योछावर किए हुए था। जिसके आगे मैं ईश्वर तक भूला हुआ था, उसी बेमुरव्वत, मतलबी दग़ाबाज़ दुनिया में आज मेरे लिए खड़े होने तक का भी ठौर नहीं ? उफ़! एक-एक क्षण अब काटना मुश्किल है। कहाँ जाऊँ ? दौड़ कर एक पेड़ के पास जाकर क्या तुम भी मुझसे न बोलोगे ? मेरी ओर फूटी आँख से भी न देखोगे ? बोलो ईश्वर के लिए बोलो। (एक पक्षी की आवाज़ सुन कर चौंकता है) यह कौन बोला ? क्या मुझे कोई पुकार रहा है ? आया-आया कहाँ हो ? वह-वह अरी ! चिड़िया बोल-बोल तू ही मेरे जीवन का सहारा बन जा। अरे ! तू भी उड़ गई (पछाड़ खाकर गिर पड़ता है फिर चिल्ला कर उठता है) ईश्वर कहाँ हो, कहाँ हो। अब सिवाय डूब मरने के मेरे लिए कोई चारा नहीं।"

[बेतहाशा दरिया में कूदने दौड़ता है, वैसे ही दरिया के भीतर से आवाज़ आती है—"सावधान" और उसके बाद दरिया में से एक चतुर्भुज दिव्य मूर्ति निकलती है]

क़ानूनीमल—"कौन ? कौन आप कौन ? क्या परमात्मा ?"

मूर्ति—'बल्कि तुम्हारी ही पवित्र आत्मा की परछाहीं। क्योंकि सच्चे हृदय से ईश्वर का नाम लेने से वह अब धुल कर एकदम पवित्र हो गई। जा अब तेरा दुनिया कुछ बिगाड़ नहीं सकती। वह खुद तुझे पूजने दौड़ेगी।

[मूर्ति अलोप हो जाती है]

क़ानूनीमल–(पैरों पर गिर कर) "धन्य धन्य भगवान। आज मेरा जीवन सफल हो गया। ईश्वर के नाम में क्या गुण है आज जाना। भगवान-भगवान। अहाहा। इस नाम में कितनी शान्ति है, कितना सच्चा सुख और आनन्द है। अब दुनिया भाड़ में जाए परवाह नहीं। मिल गया मेरे जीवन का सहारा एक भगवान का नाम। भगवान! भगवान!!"

[भजन गाता हुआ एक तरफ़ मस्त-सा जाता है]

भजन

'धन्य धन्य तेरी महिमा भगवान।'

ऊर्ध्ववाहू की आवाज़—"भगवान! हे कृपानिधान! कहाँ हो? कहाँ हो?"

क़ानूनीमल—(चौंक कर)—"यहाँ भगवान का नाम लेने वाला दूसरा कौन है?"

दृश्य ६४

पहाड़ की खड्ड—(दृश्य ८६ दूसरी बार)

ऊर्ध्ववाहू–(पेड़ पर अटके हुए)–'भगवान! भगवान! अब नहीं सहा जाता। दस दिनों से एक बूँद पानी तक के लिए

तरस रहा हूँ। क्या करूँ। अरे भगवान ! मैंने तो तुम्हारी ही तपस्या में बाँह तक सुखा डाली। फिर भी मुझ पर इतना क्रोध ? क्यों-क्यों ?"

क़ानूनीमल—(पहुँच कर) "शान्ति शान्ति महाराज। यह भगवान का नहीं, आपके शरीर ही का क्रोध जान पड़ता है जिसको आपने आत्मा की ख़ातिर इतना सताया कि बाँह तक सुखा दी। वही इस समय असहयोग करके अपना बदला चुका रहा है। परन्तु घबड़ाइये मत। सेवा के लिए सेवक आ गया।"

ऊर्ध्वबाहू—"सत्य है, यही बात है। अब जाना। परन्तु आप कौन भगवन ?"

क़ानूनीमल—"जिस तरह आपने आत्मा की ख़ातिर शरीर की परवाह नहीं की वैसे ही मैं भी एक ऐसा पापी हूँ जिसने शरीर के आगे कभी आत्मा की परवाह नहीं की थी।"

दृश्य ६५

सड़क

[मनमोहनी वेश्या ख़ाक उड़ाती, रोती, हँसती, बकती, इधर-उधर भटकती है। कुछ लड़के उसको चिढ़ाते हुए पीछा कर रहे हैं]

मनमोहनी-"वाह री दुनिया। अहाहाहा ! तुम मुझसे शादी करोगे !···अहाहहा !"

१—राही—"मनमोहनी वेश्या जिसके पैरों पर बड़े-बड़े लोग नाक रगड़ते थे आज उसका यह हाल ?"

२—राही—"पाप एक न एक दिन अपना नतीजा दिखाता ही है। फिर भी दुनियाँ की आँखें न खुलें तो ईश्वर को क्या दोष ?"

ढवढब पांण्डे रास्ते पर आते हुए—"राम ! राम ! यजमानों के यहाँ चक्कर लगाते-लगाते मर मिटा । परन्तु न किसी के घटका लगा है और न ग्रह दशा बिगड़ी है । तब कोई ढवढब पाण्डे को दान-दक्षिणा क्यों देने लगा। हत्तेरे दुनियाँ की !

मनमोहनी—(यकायक ढवढब के सामने पहुँच कर) "क्या कहा । दुनिया ? दुनिया ! आहाहाहा ! बस बस अब मैं तुम्हीं से शादी करूँगी ।.........बोलो शादी करोगे। बोलो-बोलो-बोलो ! —(ढवढब पाण्डे बहुत खुश होकर कभी पगड़ी सम्हालते हैं, कभी मूछों पर हाथ फेरते हैं, कभी धोती से मुँह पोछते हैं ।)—बोलो बोलो—(ढवढब पाण्डे के गालों पर दोनों हाथों से ताबड़तोड़ तमाचा मारती हुई) बोल-बोलो-बोलो ।"

लड़के—(पहुँच कर)—अरे पाण्डे जी भागो-भागो । यह पगली है ।"

दृश्य ६६

(ढबढब पाण्डे का मकान)

[ढबढब पाण्डे दौड़ते हुए आकर मकान में घुस जाते हैं और दरवाजा बन्द कर लेते हैं। वैसे ही पगली मनमोहनी आकर धक्का देती है और पागलपन की धुन में गाती और बीच-बीच में बड़बड़ाती है]

गाना

मनमोहनी—

अरे ! काहे किवड़िया लगाय लियो रे।
कहो काहे सुरतिया छिपाय लियो रे ॥
(बोलो बोलो बोलो । खोलो खोलो खोलो)
झलक दिखलाय मुस्काय दियो रे ।
बिजली पे बिजली गिराय दियो रे ॥
अरे ! काहे किवड़िया लगाय लियो रे ।
(अच्छा न बोलो, न खोलो; न बोलो, न खोलो ।)
अगिया लगाय दियो, जियरा जलाय दियो ।
हाय ! तन मन तो मोरा सुलगाय दियो रे ।
अरे ! काहे किवड़िया लगाय लियो रे ॥

[बाहर से द्वार की कुण्डी बन्द कर देती है । मकान से कुछ दूर पर एक आदमी चूल्हा जलाए खाना बना रहा है।

दौड़ कर उसके चूल्हे से जलते हुए चैले निकाल कर पगली ढबढब पाण्डे के मकान में आग लगा देती है। मकान जलने लगता है]

दृश्य ६७

सड़क

पगली मनमोहनी दौड़ती हुई आकर बीच सड़क पर ठीक भग्गू चौधरी की आती हुई मोटर के सामने गिर पड़ती है और उसके पीछा करने वाले भी वहाँ पहुँच जाते हैं]

भग्गू—(मोटर पर से)—"रोको रोको। (जल्दी से उतर कर) हाय ! हाय ! बहुत चोट खा गई इसे इसी मोटर पर जल्दी से अस्पताल ले जाओ।

एक आदमी—"अरे हजूर यह पगली, है पगली । घर में आग लगा कर भागी है।

भग्गू—"आग लगा दी है तो आओ चल कर बुझाएँ। इसको अब हैरान करने से क्या फ़ायदा ? पगली तो है ही।

[मोटर पगली को लेकर रवाना होती है। और भग्गू चौधरी लोगों के साथ आग बुझाने पैदल जाते हैं]

एक राही—"देखो रुपये की करामात । अब कोई कह सकता है कि यही सड़कों पर झाड़ू लगाते थे।"

दूसरा—"ख़ाली रुपये ही नहीं। इनसानियत भी तो देखो। कैसा मीठा स्वभाव है। यह सब ईश्वर की देन है, भई।"

दृश्य ६८

ढबढब पाण्डे का मकान (दृश्य ६६ दूसरी बार)

[ढबढब पाण्डे अपने जलते हुए मकान के भीतर
चिल्ला रहे हैं। लोग खाली हाय-हाय करके
रह जाते हैं, उन्हें निकालने की
किसी की हिम्मत नहीं पड़ती]

भग्गू चौधरी—(आकर)—हाय-हाय ! जान पड़ता है भीतर कोई जला जा रहा है ।

१—मैं भी यही समझता हूँ। परन्तु किया क्या जाए ?

२—और नहीं तो क्या ? किसकी जान फालतू है। [भग्गू दरवाजा तोड़ कर मकान के भीतर घुस जाता है, उसके बाद वह जलती हुये मुड़ेर पर ढबढब पाण्डे को गोद में लिए दिखाई पड़ता है]

भग्गू—"अरे भाई कोई एक रस्सी फेंक दो रस्सी।

(रस्सी फेंकी जाती है। भग्गू ढबढब पाण्डे को उसी में बाँध कर लटकाता है।)

दृश्य ६९

भग्गू चौधरी का एक कमरा

[भग्गू चौधरी बीमारी की हालत में हैं। सर पर पट्टियाँ बँधी हैं। और ढबढब पाण्डे उनकी सेवा में लगे हैं)

भग्गू—"पाण्डे जी आप क्यों कष्ट कर रहे हैं। सेवा के लिए तो दूसरे नौकर हैं।"

ढबढब—"मैं भी तो आप ही का नौकर हूँ।

भग्गू—"आप हमारे सिकत्तर गुरू हैं। लिखना-पढ़ना आप का काम है, सेवा करने का नहीं। उस पर आप पूज्य ब्राह्मण और हम अधम अछूत।

ढबढब—"न-न-न-न अब यह न कहिए। छुआछूत का पाखण्ड तो उसी आग में भस्म हो गया, जिसमें आपने अपनी जान देकर मेरी जान बचाई। उसी दिन मुझे सच्चा ज्ञान हुआ और जाना कि आदमी का बड़प्पन मनुष्यत्व में है, जात-पात में नहीं। मेरे ही लिए आप की यह दशा हुई। आप की सेवा करना तो मेरा परम धर्म है।

भग्गू—"बस। अब और काँटों में न घसीटिये। जाइये डॉक्टर साहब जरा पगली का समाचार ले आइए।"

ढबढब—"बाप रे बाप! पगली के नाम से ही प्राण सूख जाते हैं......।

दृश्य १००

कमरा

[मनमोहनी चारपाई पर बेड़ी लेटी हुई शून्य दृष्टि से छत देख रही है। धीरे-धीरे दरवाजा खोल कर डॉक्टर, कम्पाउण्डर और चपरासी कमरे में आते हैं]

डॉक्टर—(चपरासी के कान में)—चुपके-चुपके जाकर इसके हाथों को पकड़ लो।

मनमोहनी—(चौंक कर उठती हुई)—"अब दवा देने आए हो? मैं पागल हूँ? नहीं, तुम पागल, तुम पागल, तुम पागल........।"

[डॉक्टर, कम्पाउन्डर, चपरासी सब भाग कर दरवाजा बन्द लेते हैं]

मनमोहनी—(दरवाजा पीटती हुई।) "खोलो खोलो।" (बाहर से भजन की आवाज आती है। मनमोहनी ध्यान से सुनने लगती है।)

भजन

रघुपति राघौ राजा राम, पतित पावन सीताराम।
सीताराम जय सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम॥

मनमोहनी—(गाने लगती है) "सीताराम सीताराम। भज प्यारे तू सी......"

[फिर दरवाजा पीटती है। उसके बाद रोशनदान की तरफ़ देखती है और झट रोशनदान की तरफ़ चारपाई खड़ी करके उस पर चढ़ने लगती है।]

दृश्य १०।

सुनसान स्थान

[क़ानूनीमल संन्यासी के रूप में भजन गाते हुए जाते हैं।]

मनमोहनी दौड़ती हुई उनकी ओर जाती है। पास पहुँच कर चुप खड़ी हो जाती है]

क़ानूनीमल—[पगली को देख कर]—"कौन? तुम हो देवी? जो मुझे देख कर पागल हुई थी। आहा खूब मिली! ईश्वर के नाम से तुम्हारी आत्मा को शान्ति देने के लिये तुम्हीं को ढूँढ रहा था, हाँ गाओ-गाओ।

[दोनों साथ-साथ गाते हैं]

भजन

रघुपति राघौ राजा राम। पतित पावन सीताराम॥
अल्ला ईश्वर तेरो नाम। सबको सन्मति दे भगवान॥
सीता राम जय सीता राम। भज प्यारे तू सीता राम॥

दृश्य १०२

भग्गू चौधरी के आलीशान मकान का हाता

[गार्डन पार्टी की धूम है। आतशबाज़ी छूट रही है। और नाच भी हो रहा है। लोग हर तरफ़ से मोटरों और गाड़ियों पर आकर भग्गू चौधरी को मुबारक़वाद देते हैं।]

लोग—"मुबारक़ हो चौधरी साहब मुबारक़ हो। लड़का और चेयरमैनी दोनों मुबारक़ हो भग्गू" "भग्गू धन्यवाद, धन्यवाद।"

ढवढब पाण्डे—(जल्दी से बीच में आकर " हाँ हाँ आप से नहीं मुझसे हाथ मिलाइए। इसके लिये चौधरी साहब की तरफ़ से मैं मोजूद हूँ।"

भग्गू—"जी हाँ क्योंकि आप लोग जानते ही हैं कि मैं—"

ढबढब पाण्डे—"और इसलिए पार्टी में चौधरी साहब की टेवुल अलग लगाई गई है।"

लोग—"अजी वाह पांडे जी वाह ! गुलगुला खाएँ और गुड़ से परहेज़ ? जिसको ईश्वर स्वयं ही पूज्य बनाते हैं उससे परहेज़ कैसा ?"

दूसरे लोग—"बेशक उस अलग टेविल पर पांडे जी आप बैठिये, हमारे चौधरी साहब सच्चे देशहितैषी हैं। हमारे हृदय में बसते हैं तब वह हम लोगों से अलग कैसे बैठ सकते हैं। उनसे खाली हाथ मिलाने ही में नहीं बल्कि उन्हें गले लगाने में हमारा गौरव है!"

सब लोग—"बेशक़ ! बेशक !"

भग्गू—"आहा ! आज आप लोगों का सच्चा प्रेम पाकर मेरा भाग्य उसी प्रकार चमक उठा है जैसे सूर्य्य की किरणों से चाँद। इस प्रेम के प्रताप से इस अछूत की भी गिनती आज आदमियों में हो गई। ईश्वर करे यह प्रेम देश के कोने-कोने में फैल जाए। इस प्रेम पर मैं अपने इस मकान को जनता की सेवा में न्योछावर करता हूँ। (मेहमान तालियाँ

बजाते हैं।) ताकि देशबन्धु स्वामी क़ानूनीमल द्वारा, जो देश के सबसे बड़े हितैषी और ईश्वर के परम भक्त हैं और जिनके नाम को बच्चा-बच्चा तक पूजता है, इसमें राष्ट्रीय मन्दिर की स्थापना कराई जाये......"

(मनमोहिनी एक माला लिये आती है। उसको देखते ही ढबढब पांडे चिल्ला कर पगली-पगली कहते हुए गिरते-पड़ते भागते हैं। हर तरफ़ गड़बड़ी फैल जाती है।)

मनमोहनी—"शान्ति-शान्ति! डरिये मत। अब मैं पगली नहीं हूँ। मैं भी इस शुभ अवसर पर चौधरी साहब को उनकी कृपाओं के लिये धन्यवाद-स्वरूप यह माला पहनाने आई हूँ।"

भग्गू—(आगे बढ़ कर) "अहो भाग्य।" (मनमोहनी माला पहनाती है।)

ढबढब—(मेज़ के नीचे से) "सरकार दूर रहिये दूर, नहीं तो यह पगली मार बैठेगी। बड़ी मरक़ही है।'

मनमोहनी—"नहीं-नहीं! ईश्वर के सच्चे भक्त स्वामी देश-बन्धु की कृपा से जिन्होंने मेरे भ्रान्त चित्त में ईश्वर प्रेम का बीज उगा कर मेरे पागलपन को दूर कर दिया है, अब मैं बिल्कुल अच्छी हूँ।"

लोग—"बलिहारी है स्वामी देशबन्धु को!"

दृश्य १०३

सड़क

(क़ानूनीमल संन्यासी के रूप में एक गाड़ी पर विराजमान हैं। उस गाड़ी में रस्सी बाँधे सैकड़ों आदमी खींच रहे हैं। क़दम-क़दम पर फूलों की वर्षा हो रही है। लोग देशबन्धु संन्यासी क़ानूनीमल की जय के नारे लगा रहे हैं।)

दृश्य १०४

राष्ट्रीय मन्दिर का हॉल

(क़ानूनीमल संन्यासी के रूप में महात्मा गाँधी का चित्र प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय मन्दिर का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में ऊर्ध्वबाहू, भग्गू चौधरी, ढवढव पाण्डे और हर जाति के दर्शक मौजूद हैं। चित्र लटकते ही सब लोग "महात्मा गाँधी की जय" के नारे लगाते हैं।)

क़ानूनीमल—"धन्य है यह भवन कि आज यह संसार के परमपूज्य महात्मा गाँधी के चित्र से पवित्र होकर राष्ट्रीय मन्दिर का स्थान प्राप्त कर रहा है इसलिए कि हमारे देशवासी हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, इसाई, पारसी आदि सभी सप्ताह में एक दिन यहाँ इकट्ठा होकर महात्मा जी की याद करते हुए, जिन्होंने सब धर्मों और जातियों को अहिंसा-एकता-सच्चाई के मंत्र से फूक कर एक में बाँध दिया है, ईश्वर का एक साथ

ध्यान करें ताकि हमारे दिलों में यह अच्छी तरह से बैठ जाए कि भिन्न-भिन्न धर्म और जाति के होने पर भी हम सब एक ही भारत माता की सन्तान हैं और सब के परम पिता एक ही परमात्मा हैं। इस नाते हम सब एक हैं। इन्हीं महात्मा जी के पद्-चिन्हों पर चलने में हमारा कल्याण है, देश का गौरव और ईश्वर की प्राप्ति है। और ईश्वर की प्राप्ति ही में आत्मा का सच्चा सुख और शान्ति है।—

(सब मिल कर गाते हैं)

कोरस

"महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।
महात्मा चले गए हैं, रोशनी तो दे गये॥
है आत्मा तो साथ में वह ख़ुद अगर चले गये।
महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो॥
सवाल जात पाँत का, मिटाव भी मिटाव भी।
नज़र को अब उठाओ भी, क़दम को अब बढ़ाओ भी॥
महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।
अछूत को गले लगाओ, मन्दिरों को खोल दो॥
दुखी जगत की आत्मा को प्रेम रस में घोल दो।
महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो॥
धर्म पर क्यों लड़ा करें, लगी यह कैसी आग है।
नहीं यह विष, नहीं ज़हर; धर्म तो प्रेम राग है॥

महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।
समय की यह पुकार है, कि मिल के काम-काज हो॥
अलग-अलग यह राज क्या, सभी का एक राज हो।
महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।
क़दम को अब उठाओ भी, हमारा इम्तहान है।
बढ़ो हमारे वास्ते ज़मीं है, आसमान है॥
महात्मा की राह पर बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

(शम्सी)

दृश्य १०४

अनन्त (Horizon)

('महात्मा की राह पर' के गाने की ध्वनि जारी है। और क़ानूनीमल उसी को गाते हुए अनन्त की ओर जाते-जाते अलोप हो जाते हैं।)
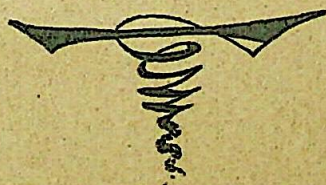
लोक-परलोक

(ड्रामे के रूप में)

ड्रामे के चरित्र

पात्र

कृष्ण भगवान	भग्गू
धर्मराज	ढबढब पाण्डे
चित्रगुप्त	ऊर्ध्वबाहू
महात्मा गाँधी	राहीनाथ
कलयुगीनाथ	पथिकानन्द
कई यमदूत	मौजीलाल
क़ानूनीमल	एक बालक

यमदूत सरदार नम्बर १

कई देवतागण जो बाद को अन्तिम दृश्य में मेहमान का पार्ट करेंगे।

१२ मृत आत्माएँ जो तृतीय अङ्क में मौलवी, आदमी, और अर्दलियों का भी पार्ट करेंगे।

पात्रियाँ

मनमोहिनी

कई सुन्दरियाँ जो अपसराएँ और नाचने वालियों का भी काम करेंगी।

सिनेमा नाटक में निम्नलिखित संशोधन कर लेने पर "लोक-परलोक" ड्रामा के रूप में स्टेज पर खेला जा सकता है :

अङ्क १

दृश्य १

विलक्षण पहाड़ी स्थान

[सिनेमा दृश्य ६+११+१५+१७+१६ (अन्त में—"और ऐक्टर और ऐक्ट्रसें रक्खीं)+२० (अन्त में—"काम निहायत खूबी से करें।" क़ानूनीमल—"अगर कोई अपना काम करने के बदले कोने में बैठ कर तुम्हारा ही नाम जपता रहे तो।" यमदूत—" तो उसे मैं निकम्मा, खुशामदी और कामचोर जान कर निकाल बाहर कर दूँगा।")+२३ (अन्त में—"वेश्यागामी रहे हो और")+२५+२७ (अन्त में—"औरतें भी बनाईं ताकि सारी दुनिया एक ही के पीछे न पड़ जाए")+३१]

दृश्य २

मैदान

(सिनेमा दृश्य ३२ (दोनों मुर्दे आँखें बन्द किए पैरों के बल चलते हैं और अपनी कमर में लिपटी हुई रस्सी को

अपने दोनों हाथों को पीछे किये हुए दबाए रहते हैं।)+३३ (क़ानूनीमल आकर अपनी बात कह कर चल देता है।)+३४ (भगुआ की तीसरी वार्ता में—"हम नहाने में डूब गएन" के बदले—"हम अस मरेन कि")+३५ (केवल अन्तिम चार लाइनें)+३७ (दृश्य अंधेरा हो जाता है। दोनों यमदूत किनारे जाकर आड़ में हो जाते हैं और वहाँ से ढबढब पांडे को अपने कन्धों पर बिठाए निकलते हैं फिर इसी तरह अन्त में भागते हैं तब भगुआ उनका पीछा करता हुआ कूदने का भाव दिखाता हुआ निकल जाता है।)

दृश्य ३

कलयुग विलास कमरा

[सिनेमा दृश्य ३६ (अन्त में—"तुम और तुम जाकर गुरुघंटाल को सलाम दो"—दो युवतियाँ जाती हैं —"ऐसा फन्दा डालता हूँ कि उसकी सारी गुरुघंटाली भूल जाए।")+४३("दृश्य छोटा या बड़ा नहीं होता। सिर्फ़ रुमाल झटकते वक़्त गोले की आवाज़ के साथ दृश्य अंधेरा हो जाता है। और युवतियाँ चीख कर अपने मुँह पर कालिख भरे रुमाल लगाए गिर पड़ती हैं। और मुँह पर कालिख मल लेती हैं। दूसरी बार इसी तरह कलयुग अपने मुँह पर कालिख मल लेता है और तीसरी बार गोले की आवाज़ के साथ पर्दा गिर जाता है)]

दृश्य ४

मैदान

सिनेमा दृश्य ४०

अङ्क—२

दृश्य १

धर्मराज का इजलास

[सिनेमा दृश्य ४५+४६ (अन्त में धर्मराज पाताल की ओर इशारा करते हुए—"देखिये अस्पताल में तड़पते हुए रोगियों के अतिरिक्त अन्धे, लंगड़े, लूले वगैरह"।)+४७+४८+५० (अन्त में धर्मराज बांई तरफ़ इशारा करते हैं।) +५१ (धर्मराज हर एक पापी की दशा भी, जो छोटे टाइप में है, कहते जाते हैं और अन्त में दाहिनी तरफ़ इशारा करते हैं।)+५२ (शुरु में धर्मराज स्वर्ग की झलक जो छोटे टाइप में है, कह कर अपनी प्रथम वार्ता कहते हैं। अन्त में—"हाँ अब जरा इनको और नरक भोगनी वेश्या को यहाँ बुलवाइए)"+५४ (धर्मराज की चुटकी पर एक कुरूप दूत के साथ वेश्या और एक सुन्दर बालक के साथ

ऊर्ध्ववाहू आते हैं ।)+अ+ब+५५+५६ दूसरा+अ+५७ (अन्त में—"संसार का काम बिना रुपये के नहीं चल सकता और इसने ऐसे-ऐसे कञ्जूसों से जिनके यहाँ रुपया सड़ता था और जो एक पैसा तक खर्च करना नहीं जानते थे—") +७०+७३ (अन्त में—"मगर बिना चार्ज दिये अपने पद का कैसे परित्याग करूँ । चित्रगुप्त जी अभी तक नहीं पधारे और चार्ज का हिसाब-किताब वही समझ सकते हैं ।" क़ानूनीमल—"तो चलिये उन्हीं के पास चलें ।" धर्मराज—"एवमस्तु ।")

दृश्य २

मैदान

[४५+४६+७१ (अन्तिम तीन लाइनों की जगह पर "अरे यह क्या ? यह ऐनक आप से आप हिलने लगी । अरे ! यह तो अब मुझे भी खींचने लगी (ऐनक की कमानी दोनों हाथों से पकड़े हुए इस तरह आगे-पीछे खिसकता है मानो उसे ऐनक खींच रही है । फिर ऐनक लिये दोनों हाथों को आगे बढ़ाए—"अरे ! अरे !! मेरे दोनों हाथ ऐनक से चिपक गए । हाय ! हाय ! ऐनक मुझे खींचे लिये जा रही है ।" इसी प्रकार निकल जाता है । दूसरी तरफ़ से यमदूत सरदार नम्बर १ खिसकता हुआ आकर—"शक्ति ही

जीवन है। शक्ति नहीं तो जिन्दगी मौत है। मैंने अपनी शक्ति खुद नष्ट कर दी।" (खिसकता हुआ) "दम फूल गया। हाथ पैर जवाब दे रहे हैं।" (रुककर खिसकता हुआ) "मुझसे कोने में अब छिप कर बैठा भी नहीं जाता—"क्या करूँ"— इसी प्रकार निकल जाता है।]

दृश्य ३

तपोवन

[सिनेमा दृश्य ६८+|७२ (अन्त में—ऐनक लगा कर— "यह मामला है।" इसके बाद धर्मराज, क़ानूनीमल और कई दूत के साथ आते हैं। कलयुगीनाथ एक किनारे खड़ा होता है। +|७३ (चित्रगुप्त की वार्ता से)+|७६ (यमदूत सरदार नम्बर १ खिसकता हुआ आता है। और अन्त में "ज़रा चल कर देखूँ" के बदले—चित्रगुप्त जी को देखकर—"तब क्यों न हो।") +|७७ (अन्तिम वाक्य—"नहीं समझे...रास्ते पर" को छोड़ कर)+|७८(शुरु में चित्रगुप्त जी चुटकी बजाते हैं और बारह मुर्दों की क़तार एक दूसरे से बँधी हुई एक यमदूत के साथ आती है। उसके बाद चित्रगुप्त जी की वार्ता—"अब आँखें खोल कर देखिये" से शुरु होती है। दोनों मुर्दे लड़ते हुए निकल जाते हैं। शेष मुर्दे चित्रगुप्त की चुटकी पर दूत के ढकेलने पर चले जाते हैं।)+|७९ अ+|७९ ब (अन्त में पीछे का पर्दा हटकर स्वर्ग का दृश्य दीखती है।

दृश्य ४

स्वर्ग

[सिनेमा दृश्य ८१]

अङ्क—३ (मृत्युलोक)

दृश्य १

सड़क

राहीनाथ—"इसमें शक नहीं कि ढवढव पाण्डे को डॉक्टर संजीवनीनन्द ने ख़ूब जिलाया क्योंकि जब पाण्डे जी दरिया से निकाले गये तो सचमुच मर चुके थे।"

पथिकानन्द—"और भगुआ भङ्गी को भला किस डॉक्टर ने जिलाया ? अरे यह कहो कि उनकी मौत ही न रही होगी। मनुष्य की क्या ताक़त कि किसी मरे हुए को जिला सके ?"

राही—"तुम्हारा कहना भी सच है । मगर भगुआ के मरने-जीने की बात क्या है ?"

पथिक—"बड़े मज़े की बात है। भगुआ को जैसे ही ख़बर मिली कि यहाँ शराब और ताड़ी का बिकना बन्द होने वाला है, वैसे ही वह शराबख़ाने दौड़ा और वहाँ जाकर अपनी ज़िन्दगी भर की प्यास बुझाने के लिए इतनी शराब पी कि वहीं ठंडा हो गया। दूकानदार दूकान बन्द कर पुलिस में

रिपोर्ट करने गया। मगर रिपोर्ट लिखाते ही उल्टे वह वहाँ इस इल्लत में गिरफ़्तार कर लिया गया कि तेरी शराब ज़हरीली थी। सुबह दारोगा जी चाय-पानी करके दूकान पर आए और उसे खुलवाया तो मगुआ उसके भीतर मज़े में बैठा हुआ मिला। बस आग हो गए। और दूकानदार पर अब झूठी रिपोर्ट लिखाने का मुक़दमा चला रहे हैं!"

राही—"क्यों न हो। पुलिस तो हमेशा पुलिस ही रहेगी चाहे दुनिया इधर की उधर हो जाए।"

(मौजीलाल अख़बार पढ़ते हुए आते हैं)

राही—"यह क्या गौर से पढ़ते हुए आ रहे हैं, बाबू मौजीलाल!"

मौजी—पढ़ूँगा क्या? सात लाख की लॉटरी मिली भी तो एक भङ्गी को। और मेरे दस टिकटों में एक भी काम न आया।"

पथिक—"लाइए ज़रा हम भी देखें।" (अख़बार पढ़ते हुए) "अरे! यह क्या? क़ानूनीमल भूत हो गए।"

मौजी—"इसको तो मैंने देखा ही नहीं। पढ़िये-पढ़िये।"

पथिक—(पढ़ता हुआ) "क़ानूनीमल की चिता में जैसे ही आग लगाई जाने लगी वैसे ही न जाने कहाँ से आकर एक शेर झपटा। लोग भूत-भूत चिल्ला कर भागे। थोड़ी देर के बाद क़ानूनीमल अपना असली रूप फिर धारण करके

कफ़न लपेटे अपने घर पहुँचे। कोहराम मच गया। उनके भूत होने का विश्वास हो गया। लोग प्राण लेकर इस तरह भागे कि बहुतों के सर फूट गए—"

(क़ानूनीमल का कफ़न लपेटे परेशान आना)

राही—"अरे बाप रे! वह भूत तो यहाँ भी आ पहुँचा।

(सब भूत-भूत चिल्लाते हुए भाग जाते हैं)

क़ानूनीमल—"जिस दुनिया पर मुझे इतना घमण्ड था वही मुझसे भागने लगी। हाय! अरे! भाई सुनो तो—"

(उसी तरफ़ जाता है और दूसरी तरफ़ से भगुआ सड़क बहारता आता है)

भगुआ—"जो दारू और ताड़ी न पिये के मिली तो हम पञ्चन के थका कसस उतरी? जब हमका तपेदिक होय गवा रहा तब ताड़ी ही पी-पी के हम बचे न रहा। और दारू तो सभै जानत हैं कि दवाई है दवाई। मुल का बताई।"

[इसके बाद सिनेमा दृश्य ६०, अन्त में झाड़ू ताने भगुआ पीछे जाना। सब आदमी भी चले जाते हैं।]

दृश्य २

कुछ दूरी पर दरिया। किनारे पर गिरा हुआ मकान और पेड़ पर ऊर्ईशाहू बेहोश पत्तों से छिपे अटके हैं। मनमोहिनी वेश्या को लोग चारपाई पर लिटाए होश में ला रहें हैं।

[सिनेमा दृश्य ९१ (नम्बर ४ की वार्ता से। अन्त में मनमोहिनी हँसती-चिल्लाती चल देती है।) +९३ (क़ानूनी-मल की वार्ता से)+९४]

दृश्य ३

सड़क

[सिनेमा दृश्य ९५ (अन्त में सब भाग जाते हैं)+९६ ("से पढ़ना सीख रहा है" के स्थान पर—"दो अरदली के साथ आते हैं।") अन्त में—मनमोहिनी ख़ून से तर-बतर चिल्लाती हुई आकर गिर पड़ती है। उसके पीछे डण्डा ताने कई आदमी आते हैं।]

भग्गू—"हाय ! हाय ! यह क्या अनर्थ कर रहे हो ?"

१ आदमी—"अरे सरकार यह पगली है, हत्यारिनी है। इसने पाण्डे जी को जीते ही जला दिया है।"

२—"जैसे ही पाण्डे जी अपने घर में घुसे वैसे ही इसने बाहर से कुण्डी चढ़ा कर घर में आग लगा दी है।"

भग्गू—"और पाण्डे जी ?"

३—"उन्हें कैसे कोई बचाए ? मकान चारों तरफ़ जल रहा है।"

भग्गू—"तो इसे इस तरह मार डालने से आग बुझ जाएगी ? यह अगर पगली है, तो यह नहीं आप लोग हत्यारे हैं जो उन्हें मकान में जलते हुए छोड़ आए। अरदली इसे